■ माघ कृष्णा - 9 ■ संवत 2080 ■ वर्ष - 11 ■ अंक - 189 ■ पृष्ठ - 8 ■ रु. 5/- चेन्नई » रविवार » 04-02-2024 ■ www.dakshinbharat.com ■ Email : chennai@dakshinbharat.com

दक्षिण भारत राष्ट्रमत

தக்ஷின் பாரத் ராஷ்ட்ரமத் | தினசரி ஹிந்தி நாளிதழ் | चेन्नई और बेंगलूरु से एक साथ प्रकाशित

5 भ्रष्टाचार के 'बेताज बादशाह' केजरीवाल हमेशा जांच से भागते रहते हैं : भाजपा

6 सूबेदार उजीन सिंह शेखावत : दुश्मन की जिस पोस्ट से मिल रही थी आतंकियों को मदद, उसमें रच दिया वीरता का इतिहास

7 मैं जीवित हूं : पूनम पांडे ने सर्विकल कैंसर से मौत की खबरों के बाद कहा

फर्स्ट टेक

इमरान, उनकी पत्नी को सात-सात साल कैद की सजा

इस्लामाबाद/भाषा। पाकिस्तान की एक अदालत ने जेल में बंद पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान और उनकी पत्नी बुशरा बीबी को 'गैर-इस्लामी निकाह' मामले में शनिवार को सात-सात वर्ष कैद की सजा सुनाई। बुशरा के पहले पति खावर मनेका ने मामला दर्ज कराया था, जिसमें आरोप लगाया गया था कि बुशरा ने दो विवाहों के बीच अनिवार्य अंतराल यानी 'इद्दत' की इस्लामी प्रथा का उल्लंघन किया है। मनेका ने बुशरा बीबी और पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ (पीटीआई) पार्टी के संस्थापक खान पर शादी से पहले व्यभिचारी संबंध में होने का आरोप भी लगाया था। 'जियो न्यूज' की खबर के अनुसार, शुक्रवार को रावलपिंडी के अदियाला जेल परिसर के अंदर 14 घंटे तक मामले की सुनवाई के एक दिन बाद वरिष्ठ सिविल न्यायाधीश कुदरतुल्ला ने आज फैसला सुनाया।

पुणे विश्वविद्यालय में रामलीला पर आधारित नाटक को लेकर प्रोफेसर और पांच छात्र गिरफ्तार

पुणे/भाषा। पुणे विश्वविद्यालय के एक प्रोफेसर और पांच छात्रों को रामलीला पर आधारित एक नाटक का मंचन करके धार्मिक भावनाओं को आहत करने के आरोप में गिरफ्तार किया गया है। इस नाटक में कथित तौर पर आपत्तिजनक संवाद और दृश्य थे। पुलिस ने शनिवार को यह जानकारी दी। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (एबीवीपी) के पदाधिकारियों और पुणे विश्वविद्यालय के ललित कला केंद्र के छात्रों के बीच शुक्रवार शाम नाटक के मंचन को लेकर हाथापाई हो गई थी। ललित कला केंद्र का नाटक रामलीला में विभिन्न भूमिकाएं निभाने वाले अभिनेताओं के मंच के पीछे के मजाक पर आधारित था। पुलिस निरीक्षक अंकुश चिंतामन ने बताया कि एबीवीपी पदाधिकारी हर्षवर्द्धन हरपुडे की शिकायत के आधार पर भारतीय दंड संहिता (आईपीसी) की धारा 295 (ए) (जानबूझकर और किसी भी वर्ग की धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचाने का दुर्भावनापूर्ण इरादा) और अन्य प्रासंगिक प्रावधानों के तहत मामला दर्ज किया गया है।

04-02-2024	05-02-2024
सूर्यास्त 6:10 बजे	सूर्योदय 6:34 बजे

BSE	NSE
72,085.63 (+440.34)	21,853.80 (+156.35)

सोना	चांदी
6,522 रु. (24 कैरेट) प्रति ग्राम	78,000 रु. प्रति किलो

मिशन मंडेला

दक्षिण भारत राष्ट्रमत

दक्षिण भारत का लोकप्रिय हिन्दी दैनिक

epaper.dakshinbharat.com

कैलाश मण्डेला, मो. 9828233434

हाल ए पाकिस्तान

सत्ता पर हावी है नवाज
इमरान मियां है नजरबंद।
बलुचों ने बजवा दी घण्टी,
सेनाएं भी लगती स्वछंद।
बेखौफ हुई दहशतगर्दी,
हावी हुकुमत पर सिर्फ चंद।
घर में खाने के लाले पर,
कर रहे जंग की दंद-फंद।।

समुद्री डकैती और तस्करी किसी भी सूरत में बर्दाश्त नहीं : राजनाथ

आईएनएस संधायक (यार्ड 3025) नौसेना के बेड़े में शामिल

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

नई दिल्ली/वार्ता। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने शनिवार को विश्व व्यापारिक समुदाय को आश्वस्त किया कि 'न्यू इंडिया' ने समुद्री डकैती और तस्करी को किसी भी सूरत में बर्दाश्त नहीं करने की प्रतिज्ञा ली है।

सिंह ने नौसेना डॉकयार्ड, विशाखापत्तनम में आयोजित समारोह में नौसेना के पहले विशाल सर्वेक्षण पोत आईएनएस संधायक (यार्ड 3025) नौसेना के बेड़े में शामिल किये जाने के मौके पर कहा कि यह पोत हिन्द-प्रशांत क्षेत्र में भारत की एक महाशक्ति के रूप में भूमिका को और मजबूत करेगा तथा शांति और सुरक्षा बनाए रखने में भारतीय नौसेना की मदद करेगा।

रक्षा मंत्री ने नौसेना की सराहना करते हुए कहा कि यह न केवल भारतीय जहाजों, बल्कि मित्र देशों के जहाजों को भी सुरक्षा प्रदान कर रही है। उन्होंने हाल ही में अदन की खाड़ी में एक ब्रिटिश जहाज पर ड्रोन हमले का जिक्र किया, जिसके परिणामस्वरूप तेल टैंकरों में आग लग गई। उन्होंने आग बुझाने में त्वरित प्रतिक्रिया के लिए भारतीय नौसेना की सराहना करते हुए कहा कि इस प्रयास को दुनिया ने पहचाना और सराहा।

सिंह ने पिछले कुछ दिनों में पांच समुद्री डकैती के प्रयासों को विफल करने और ड्रोन तथा मिसाइलों से हमला किए गए जहाजों की सहायता करने के अलावा 80 मछुआरों एवं नौसैनिकों को बचाने के लिए भी भारतीय नौसेना की सराहना की।

आडवाणी को भारत रत्न सम्मान

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी बोले- मेरे लिए अत्यंत भावुक क्षण

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

नई दिल्ली/भाषा। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने शनिवार को घोषणा की कि भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के वरिष्ठ नेता और पूर्व उपप्रधानमंत्री लालकृष्ण आडवाणी को देश के सर्वोच्च नागरिक सम्मान भारत रत्न से नवाजा जाएगा और उन्होंने इसे अपने लिए ''एक अत्यंत भावुक क्षण'' बताया।

इस घोषणा के बाद आडवाणी ने राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू और प्रधानमंत्री मोदी का आभार जताया और कहा कि यह एक व्यक्ति के रूप में न केवल उनका, बल्कि उन आदर्शों और सिद्धांतों का भी सम्मान है जिनका पालन करने का उन्होंने प्रयास किया।

भाजपा के वरिष्ठ नेता ने कहा, ''आरएसएस (राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ) में शामिल होने के बाद से जीवन में मुझे जो भी जिम्मेदारी मिली, उसे निभाते हुए अपने प्रिय देश की समर्पित और निस्वार्थ सेवा करने में ही मुझे खुशी मिली।

इससे पहले मोदी ने सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर एक पोस्ट में कहा, हमारे समय के सबसे सम्मानित राजनेताओं में शामिल आडवाणी का भारत के विकास में महान योगदान है। उन्होंने जीवन की शुरुआत जमीनी स्तर पर काम करने से की और हमारे उपप्रधानमंत्री के रूप में देश की सेवा की।

भाजपा विधायक ने शिवसेना नेता को गोली मारी, स्थिति नाजुक

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

ठाणे/भाषा। महाराष्ट्र के ठाणे जिले में भूमि विवाद को लेकर भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के एक विधायक द्वारा गोली चलाने के बाद शिवसेना के एक नेता को कई गोलियां लगीं और उनकी हालत नाजुक है। इसके बाद विपक्ष ने राज्य में कानून एवं व्यवस्था की स्थिति बिगड़ने का आरोप लगाते हुए राज्य के मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे के इस्तीफे की मांग की।

उपमुख्यमंत्री एवं राज्य के गृह मंत्री देवेंद्र फडनवीस ने कहा कि उन्होंने यह पता लगाने के लिए एक उच्च स्तरीय जांच के आदेश दिए हैं कि विधायक ने किस कारण से और किन परिस्थितियों में गोली चलायी।

अतिरिक्त पुलिस आयुक्त दत्तात्रेय शिंदे ने मीडिया को बताया कि कल्याण से भाजपा के विधायक गणपत गायकवाड़ ने शुक्रवार रात उल्हासनगर इलाके में हिल लाइन पुलिस थाने के वरिष्ठ निरीक्षक के कक्ष के अंदर शिवसेना की कल्याण इकाई के प्रमुख महेश गायकवाड पर गोलियां चलाईं।

भाजपा विधायक 14 तक पुलिस हिरासत में

ठाणे/भाषा। ठाणे जिले की एक अदालत ने एक पुलिस थाने के भीतर शिवसेना के एक स्थानीय नेता पर गोली चलाने के आरोप में गिरफ्तार भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) विधायक गणपत गायकवाड को शनिवार को 14 फरवरी तक पुलिस हिरासत में भेज दिया।

यह मेरी गारंटी है कि देश के हर गरीब परिवार के पास पक्का घर होगा : मोदी

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

संबलपुर (ओडिशा)/वार्ता। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शनिवार को कहा कि हाल ही में पेश किए गए केंद्रीय बजट ने देश के सभी वर्गों, खासकर गरीब लोगों के विकास की गारंटी दी है।

पश्चिमी ओडिशा में संबलपुर के बाहरी इलाके में स्थित रेमेड ग्राउंड में 'गारंटी समाधान' नामक विशाल सभा को संबोधित करते हुए मोदी ने कहा, मोदी की गारंटी का मतलब है गारंटी, पूरे होने की गारंटी। मोदी की गारंटी यह सुनिश्चित करेगी कि देश के हर गरीब परिवार के पास पक्का घर होगा। उन्होंने कहा कि देश में चार करोड़ से अधिक गरीब परिवारों को पक्के मकान उपलब्ध कराए गए हैं और केंद्र सरकार ने बजट में गरीबों के लिए दो करोड़ और पक्के मकान बनाने की घोषणा की है। उन्होंने कहा कि केंद्र की भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) सरकार यह सुनिश्चित करने के लिए दिन-रात काम कर रही है कि देश के हर गरीब परिवार के पास पक्का घर हो।

प्रधानमंत्री ने कहा कि उनकी सरकार की प्राथमिकता है कि गरीबों और किसानों की आय का स्तर कैसे बढ़ाया जाए। उन्होंने कहा कि हाल ही में संसद में पेश अंतरिम बजट का उद्देश्य गरीबों, महिलाओं, युवाओं और अन्य को सशक्त बनाना है।

मोदी ने कहा,यह बजट सबके विकास की गारंटी देता है। उन्होंने कहा कि ओडिशा के लगभग 40 लाख किसानों को पीएम किसान सम्मान निधि के तहत सीधा लाभ मिला है। सरकार ने प्रत्येक किसान के खाते में 30,000 रुपये स्थानांतरित किए हैं और न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) में बढ़ोतरी सुनिश्चित की है।

प्रधानमंत्री ने कहा कि 2014 से पहले कांग्रेस सरकार ने राज्य में किसानों से 36,000 करोड़ रुपये का धान खरीदा था, लेकिन भाजपा सरकार के पिछले दस वर्षों के कार्यकाल के दौरान किसानों को एमएसपी के लिए 1.10 लाख करोड़ रुपये मिले हैं। उन्होंने आदिवासियों की उपेक्षा करने और उन्हें अपने वोट बैंक के रूप में इस्तेमाल करने के लिए कांग्रेस की कड़ी आलोचना की और कहा कि भाजपा सरकार ने उन्हें प्रमुखता दी है और पिछले दस वर्षों के दौरान आदिवासी क्षेत्रों के विकास के लिए बजट आवंटन में वृद्धि की है। उन्होंने कहा कि ये भाजपा ही है, जिसने आदिवासी समुदाय को पहचाना और श्रीमती द्रौपदी मुर्मु को भारत का राष्ट्रपति बनाया।

कराची में पाकिस्तान चुनाव आयोग के कार्यालय के बाहर विस्फोट

कराची/भाषा। पाकिस्तान के कराची में निर्वाचन आयोग के प्रांतीय कार्यालय के समीप मिले विस्फोटक से भरे एक बैग में छोटा-सा धमाका हुआ। पुलिस ने बताया कि पाकिस्तान निर्वाचन आयोग (ईसीपी) के प्रांतीय कार्यालय की पार्किंग में एक बैग मिला, जिसके बाद उसे कूड़े में फेंक दिया गया और उसमें छोटा-सा धमाका हुआ। बैग में संवर्धित विस्फोटक उपकरण (आईईडी) था। पुलिस उपमहानिरीक्षक सैयद असद रजा ने बताया कि पाकिस्तान निर्वाचन आयोग के प्रांतीय मुख्यालय के पार्किंग क्षेत्र में एक प्लास्टिक बैग में विस्फोटक/बम रखा हुआ था। उन्होंने कहा, बैग में एक 'टाइमर' के साथ आईईडी रखा था और इसे रात नौ बजे से 10 बजे के बीच विस्फोट के लिए तैयार किया गया था लेकिन पार्किंग की सफाई कर रहे एक कर्मचारी ने बैग देखा और उसे इमारत के बाहर कूड़े में फेंक दिया। उन्होंने बताया कि जब बैग को फेंका गया तो उसमें छोटा-सा धमाका हुआ लेकिन 400 ग्राम वजनी बम फटा नहीं। घटना में किसी के हताहत होने की सूचना नहीं है।

उपराष्ट्रपति धनखड़ ने पुस्तक का विमोचन किया, कहा

भारत का अमृतकाल आज गौरव काल है

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

फरीदाबाद/भाषा। भारत के उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने शनिवार को यहां हरियाणा सरकार के नौ वर्षों पर आधारित 'नए एवं जीवंत हरियाणा का उदय' शीर्षक नामक पुस्तक का विमोचन किया और कहा कि भारत का अमृतकाल आज गौरव काल है।

पुस्तक के विमोचन के अवसर पर हरियाणा के राज्यपाल बंडारू दत्तात्रेय और मुख्मयंत्री मनोहर लाल सहित कई गणमान्य अतिथि उपस्थित रहे।

पुस्तक का विमोचन करने के बाद उपराष्ट्रपति ने हरियाणा को देश के लिए रोल मॉडल बताते हुए कहा कि मुख्यमंत्री मनोहर लाल खट्टर की दूरदर्शी सोच के अनुरूप व्यवस्था परिवर्तन और सुशासन को लेकर किया गया कार्य आसान नहीं था। उन्होंने कहा कि आज हरियाणा प्रदेश के 'ट्रांसपेरेंट-अकाउंटेबल-ऑनेस्ट रिक्रूटमेंट प्रोसेस' की चर्चा पूरे देश में होती है। धनखड़ ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारत पूरी तरह से बदल रहा है। आज के दिन उभरते हुए भारत को आप देखेंगे तो जो परिकल्पना हमारी सांस्कृतिक विरासत में है वो हमारी तरक्की में पूरी तरह झलक रही है।

उन्होंने कहा कि भारत का अमृतकाल आज गौरव काल है। यह वह कालखंड है जिसमें भारत की ऐसी मजबूत नींव भरी जा रही है, जो यह सुनिश्चित करेगी कि 2047 का भारत विकसित भारत होगा।

उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ अपनी पत्नी सुदेश धनखड़ के साथ यहां 37वें सूरजकुंड अंतरराष्ट्रीय हस्त-शिल्प मेले में पंहुचें। उन्होंने इस दौरान विभिन्न स्टॉल पर जाकर बुनकरों, हस्तशिल्प कलाकारों और शिल्पकारों के बने उत्पादों को देखा तथा उनकी हौसला अफजाई की।

ड्रोन हमले के बाद अमेरिका की जवाबी कार्रवाई, इराक एवं सीरिया में ईरान समर्थक समूहों पर किए हमले

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

वाशिंगटन/भाषा। अमेरिका ने जॉर्डन में अपने सैनिकों पर हमलों के खिलाफ जवाबी कार्रवाई करते हुए इराक और सीरिया में ईरान समर्थित मिलिशिया (असैनिक लड़ाकों) और ईरानी 'रिवोल्यूशनरी गार्ड' के 85 ठिकानों पर हमले किए।

जॉर्डन में ईरान समर्थित समूह के ड्रोन हमले में तीन अमेरिकी सैनिकों की मौत हो गई थी और 40 से अधिक सैनिक घायल हो गए थे।

अमेरिका के राष्ट्रपति जो बाइडन और अन्य शीर्ष अमेरिकी नेता कई दिनों से चेतावनी दे रहे थे कि अमेरिका मिलिशिया समूहों पर जवाबी हमला करेगा और उन्होंने स्पष्ट कर दिया कि यह केवल एक हमला नहीं बल्कि समय के साथ की जाने वाली कई स्तर की प्रतिक्रिया होगी।

अमेरिका द्वारा शुक्रवार को हमले किए जाने के बाद बाइडन ने एक बयान जारी कर कहा, अमेरिका पश्चिम एशिया या दुनिया में कहीं भी संघर्ष नहीं चाहता, लेकिन जो हमें नुकसान पहुंचाना चाहते हैं, वे यह जान लें: यदि आप किसी अमेरिकी को नुकसान पहुंचाएंगे, तो हम जवाब देंगे।

बाइडन ने पिछले रविवार को कहा था कि जॉर्डन में ईरान के 'इस्लामिक रिवोल्यूशनरी गार्ड्स कॉर्प्स' (आईआरजीसी) द्वारा समर्थित आतंकवादी समूहों के ड्रोन हमले में तीन अमेरिकी सैनिकों की मौत हो गई।

बाइडन ने शुक्रवार को कहा, मेरे निर्देश पर आज दोपहर अमेरिकी सैन्य बलों ने इराक और सीरिया में उन केंद्रों को निशाना बनाया जिनका उपयोग आईआरजीसी और संबद्ध मिलिशिया समूह अमेरिकी बलों पर हमला करने के लिए करते हैं। हमारी जवाबी कार्रवाई आज से शुरू हुई जो हमारे द्वारा चुनी गई जगहों और हमारे चुने समय पर जारी रहेगी।

'यूएस सेंट्रल कमांड' (सेंटकॉम) के अनुसार, स्थानीय समयानुसार शाम चार बजे (भारतीय समयानुसार शुक्रवार देर रात ढाई बजे) उसकी सेना ने 'आईआरजीसी कुद्स फोर्स' और संबद्ध मिलिशिया समूहों के खिलाफ इराक और सीरिया में हवाई हमले किए।

अमेरिकी सैन्य बलों ने 85 से अधिक लक्ष्यों पर हमला किया, इस हमले में अमेरिका से भेजे गए लंबी दूरी के बमवर्षक विमानों सहित कई विमान शामिल थे।

सेंटकॉम ने बताया कि जिन ठिकानों पर हमला किया गया, उनमें कमान और नियंत्रण संचालन केंद्र, खुफिया केंद्र, रॉकेट एवं मिसाइल और मानव रहित हवाई वाहन भंडारण, मिलिशिया समूहों और उनके आईआरजीसी प्रायोजकों की रसद और गोला-बारूद आपूर्ति श्रृंखला केंद्र शामिल हैं।

सहज स्मृति योग

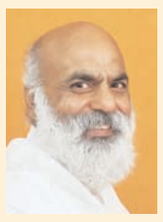

व्यक्ति के मन में जो आध्यात्मिक प्रश्न उठते हैं उनका इस स्तंभ में समाधान प्रस्तुत करने का काम कर रहे हैं गुरुजी श्री नंदकिशोर तिवारी। व्यक्ति की पृष्ठभूमि चाहे किसी भी मत, सम्प्रदाय, मज़हब से हो, सहज स्मृति योग का सरोकार मनुष्य के मात्र आत्मवान होने से है। इसलिए सहज स्मृति योग का ध्यान केवल जिज्ञासु के समाधान पर रहता है। आप भी अपनी जिज्ञासाएं guruji@darpanfoundation.com पर ईमेल या व्हाटस अप (9902912396) द्वारा भेज सकते हैं।

प्रश्न: गुरुजी, निंदा, खण्डना और आलोचना में क्या अंतर है ? निंदा को स्वरूप से ही त्याज्य क्यों कहा जाता है ? क्या किसी नृशंस अपराध की भी निंदा नहीं की जानी चाहिए?

उत्तर: पूर्णता में दोष दर्शन करना मात्र निंदा है और पूर्णता में भेद-दर्शन करना खंडना है।गुण-दोष विवेचना कर खंड-ज्ञान को अखंडित ज्ञान या पूर्ण ज्ञान में रूपांतरित करने की कला को आलोचना कहा जाता है। इसके लिए समालोचक में परम विवेक और परम सौंदर्य बोध होना चाहिए, अन्यथा उसके द्वारा की जा रही आलोचना, उसके ना चाहते हुए भी पाठकों या श्रोताओं को निंदा या खंडना आदि कुछ भी लग सकती है। तत्वबोध प्राप्त मति से देखने पर सर्वत्र पूर्ण अर्थात् ईश्वर ही दिखता है तो फिर ईश्वर या पूर्ण की निंदा कौन कर सकता है, सिवाय उसके जो स्वयं ही अपूर्णता ग्रसित हो? इसीलिए निंदा स्वरूप से ही त्याज्य जानी जाती है। अपराध की भर्त्सना की जाती है और विधि विधान से वही दण्डित होता है जो कर्ता ठहरता है, निंदा शब्द का प्रयोग वहाँ अप्रासंगिक है । पर यह भी सत्य ही है कि, वैश्विक समाज की ओर देखने पर हम पाते हैं कि भले ही वह अज्ञानवश ही पर, भर्त्सना के बजाय निंदा करने का प्रचलन तो है।

धनशोधन की चिंताओं, केवाईसी गैर-अनुपालन के कारण

आरबीआई को लगाना पड़ा पेटीएम बैंक पर प्रतिबंध

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

नई दिल्ली/भाषा। धन शोधन संबंधी चिंताओं और वॉलेट पेटीएम तथा इसकी बैंकिंग शाखा के बीच सैकड़ों करोड़ रुपए के संदिग्ध लेनदेन के कारण भारतीय रिजर्व बैंक को विजय शेखर शर्मा द्वारा संचालित इकाइयों पर शिकंजा कसना पड़ा। सूत्रों ने यह जानकारी दी। आरबीआई ने पेटीएम पेमेंट्स बैंक लिमिटेड को किसी भी ग्राहक खाते, प्रीपेड साधन, वॉलेट एवं फास्टैग में 29 फरवरी, 2024 के बाद जमा या टॉप-अप स्वीकार न करने का निर्देश दिया था। आरबीआई ने बयान में इसकी जानकारी देते हुए कहा कि यह कदम व्यापक प्रणाली ऑडिट रिपोर्ट और बाहरी ऑडिटरों की अनुपालन सत्यापन रिपोर्ट के बाद उठाया गया है। इन रिपोर्टों से भुगतान बैंक में लगातार नियमों के गैर-अनुपालन और सामग्री पर्यवेक्षण से जुड़ी चिंताएं सामने आईं।

आरबीआई ने इसके पहले 11 मार्च, 2022 को पीपीबीएल को तत्काल प्रभाव से नए ग्राहकों को जोड़ने से रोक दिया था। आरबीआई ने कहा कि पेटीएम पेमेंट्स बैंक के ग्राहकों को बचत बैंक खाते, चालू खाते, प्रीपेड माध्यम, फास्टैग, नेशनल कॉमन मोबिलिटी कार्ड (एनसीएमसी) सहित अपने खातों से शेष राशि की निकासी या उपयोग की अनुमति किसी प्रतिबंध के बगैर दी जाएगी। वन97 कम्युनिकेशंस के पास पेटीएम पेमेंट्स बैंक लिमिटेड में 49 प्रतिशत हिस्सेदारी है लेकिन वह इसे अपनी सहयोगी के रूप में वर्गीकृत करता है, न कि अनुषंगी कंपनी के रूप में। सूत्रों ने कहा कि पेटीएम पेमेंट्स बैंक लिमिटेड (पीपीबीएल) के पास लाखों गैर-केवाईसी (अपने ग्राहक को जानें) अनुपालन वाले खाते थे और हजारों मामलों में कई खाते खोलने के लिए एक ही पैन का उपयोग किया गया था। सूत्रों ने कहा कि ऐसे उदाहरण हैं, जहां लेनदेन का कुल मूल्य करोड़ों रुपए में है, जिससे धन शोधन की चिंताएं बढ़ रही हैं। एक विश्लेषक के मुताबिक, पेटीएम पेमेंट्स बैंक के पास करीब 35 करोड़ ई-वॉलेट हैं। इनमें से लगभग 31 करोड़ निष्क्रिय हैं, जबकि केवल लगभग चार करोड़ ही बिना किसी शेष राशि या बहुत कम शेष के साथ सक्रिय होंगे। सूत्रों ने कहा कि असामान्य रूप से बड़ी संख्या में निष्क्रिय खातों का उपयोग फर्जी खातों के लिए में किए जाने की आशंका है। ऐसे में केवाईसी में बड़ी अनियमितताएं हुईं है, जिससे ग्राहकों, जमाकर्ताओं और वॉलेट धारकों को गंभीर जोखिम का सामना करना पड़ा।

पंजाब के राज्यपाल और चंडीगढ़ के प्रशासक पुरोहित ने अपने पदों से इस्तीफा दिया

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

चंडीगढ़/भाषा। पंजाब के राज्यपाल और चंडीगढ़ के प्रशासक बनवारीलाल पुरोहित ने व्यक्तिगत कारणों का हवाला देते हुए शनिवार को राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू को अपना इस्तीफा सौंप दिया।

पुरोहित (83 वर्ष) ने अपने त्याग पत्र में लिखा, व्यक्तिगत कारणों और कुछ अन्य प्रतिबद्धताओं की वजह से, मैं पंजाब के राज्यपाल और केंद्र शासित प्रदेश चंडीगढ़ के प्रशासक के पद से इस्तीफा दे रहा हूं। कृपया इसे स्वीकार करें। पुरोहित ने शुक्रवार को यहां केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह से मुलाकात की थी। उनकी मुलाकात चंडीगढ़ महापौर चुनाव में भाजपा की जीत के कुछ दिनों बाद हुई थी। महापौर चुनाव में तीनों पदों पर भाजपा को जीत मिली है। इन चुनावों में कांग्रेस- आम आदमी पार्टी गठबंधन को झटका लगा है। इस गठबंधन के नेताओं ने पीठासीन अधिकारी पर मतपत्रों के साथ छेड़छाड़ करने का आरोप लगाया है। पंजाब और हरियाणा उच्च न्यायालय की पीठ ने बुधवार को आम आदमी पार्टी (आप) को अंतरिम राहत देने से इनकार कर दिया था।

पार्टी ने अदालत के एक सेवानिवृत्त न्यायाधीश की देखरेख में दोबारा चुनाव कराने की मांग की थी। उच्चतम न्यायालय ने उच्च न्यायालय के आदेश को चुनौती देने वाली याचिका पर तत्काल सुनवाई के 'आप' पार्षद के अनुरोध पर विचार करने के लिए शुक्रवार को सहमति जताई थी।

केंद्रीय मंत्री मीनाक्षी लेखी ने 'भारत माता की जय' ना बोलने पर दर्शकों को आड़े हाथ लिया

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

कोझिकोड (केरल)/भाषा। केंद्रीय मंत्री मीनाक्षी लेखी ने शनिवार को यहां एक युवा सम्मेलन में दर्शकों के एक वर्ग पर इस बात के लिए नाराजगी जताई कि बार-बार कहने के बावजूद उन्होंने 'भारत माता की जय' का नारा नहीं लगाया। स्पष्ट रूप से अप्रसन्न दिख रही लेखी ने उनसे पूछा कि क्या भारत उनकी मां नहीं हैं? यहां तक कि एक महिला को, जो नारा लगाने को राजी नही थी, उसे केंद्रीय मंत्री ने कार्यक्रम स्थल छोड़ने का सुझाव भी दिया। इस सम्मेलन का आयोजन कुछ दक्षिणपंथी संगठनों द्वारा किया गया था। अपने भाषण का समापन करते हुए, वरिष्ठ भारतीय जनता पार्टी(भाजपा) नेत्री ने 'भारत माता की जय' का नारा लगाया और दर्शकों से इसे दोहराने के लिए कहा। चूँकि दर्शकों की प्रतिक्रिया अपेक्षा के अनुरूप नहीं थी, उन्होंने पूछा कि क्या भारत उनका घर नहीं है।

केंद्रीय विदेश एवं संस्कृति राज्य मंत्री ने कहा, क्या भारत सिर्फ मेरी मां है या आपकी भी मां है? मुझे बताओ...मुझे बताओ...क्या इसमें कोई संदेह है? कोई संदेह नहीं?...उत्साह व्यक्त करने की जरूरत है। उन्होंने नारा दोहराया और कहा कि बाईं ओर के दर्शकों की प्रतिक्रिया अभी भी अच्छी नही है। दर्शकों में से एक महिला की ओर इशारा करते हुए लेखी ने कहा, पीली पोशाक वाली महिला खड़ी हो सकती हैं। बगल की तरफ मत देखिए। मैं आपसे इसी तरह बात करने जा रही हूं। मैं आपसे एक सवाल पूछने जा रही हूं। सीधा सवाल। भारत आपकी माता नहीं हैं?... यह रवैया क्यों? लेखी ने फिर भारत माता की जय के नारे लगाए। लेकिन महिला अभी भी ऐसे ही खड़ी थी।

'पीएलआई योजना केवल शुरुआत देगी, आगे चलकर प्रतिस्पर्धा ही अहम होगी'

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

नई दिल्ली/भाषा। वाणिज्य और उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने शनिवार को कहा कि उद्योग को उत्पादन से जुड़े प्रोत्साहन (पीएलआई) योजना को प्रारंभिक समर्थन के रूप में देखना चाहिए, क्योंकि उद्योग के लिए आगे चलकर प्रतिस्पर्धा ही अहम होगी। उन्होंने पीएलआई प्रोत्साहन का लाभ पाने वाली कंपनियों से योजना के बेहतर कार्यान्वयन के लिए रचनात्मक आलोचना और प्रतिक्रिया साझा करने को कहा। उन्होंने कहा, यह विचार भारत को विनिर्माण महाशक्ति बनाने का है और आगे एक लंबी यात्रा तय करनी है।

सरकारी अधिकारियों और उद्योग जगत के प्रतिनिधियों सहित 1,200 से अधिक हितधारक यहां 14 पीएलआई योजनाओं की प्रगति पर विचार-विमर्श कर रहे हैं। गोयल ने कहा, इन प्रोत्साहनों को बैसाखी के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए और हम आपको सरकारी सब्सिडी पर निर्भर नहीं बनाना चाहते हैं। यह केवल एक शुरुआत की तरह है। उन्होंने कहा कि पीएलआई योजना केवल आपको शुरुआत में थोड़ा सा बढ़ावा देने के लिए है और कृपया इसे प्रारंभिक समर्थन के रूप में देखें, (क्योंकि) आगे चलकर प्रतिस्पर्धा ही अहम होगी। उन्होंने कहा, हमें अंततः एक-दूसरे के साथ और दुनिया के साथ प्रतिस्पर्धा करनी होगी।

एक राष्ट्र, एक चुनाव से आर्थिक विकास को बढ़ावा मिलेगा: सीआईआई

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

नई दिल्ली/भाषा। उद्योग मंडल भारतीय उद्योग परिसंघ (सीआईआई) ने एक साथ चुनाव कराने के लिए अपना समर्थन व्यक्त करते हुए कहा कि इससे केंद्र और राज्य स्तर पर चुनावी चक्र एक हो जाएंगे। सीआईआई ने कहा कि 'एक राष्ट्र एक चुनाव' से शासन की दक्षता बढ़ेगी और आर्थिक विकास को बढ़ावा मिलेगा। सीआईआई ने शुक्रवार को एक देश एक चुनाव (ओएनओई) पर उच्च स्तरीय समिति के सामने अपने विचार रखे। पूर्व राष्ट्रपति राम नाथ कोविन्द की अध्यक्षता में ओएनओई पर उच्च स्तरीय समिति ने अपनी पांचवीं बैठक की।

उद्योग निकाय ने कहा, सीआईआई का विचार चुनावी प्रक्रिया को सुव्यवस्थित करने के आर्थिक लाभों पर आधारित है, जिससे शासन की दक्षता बढ़ेगी और आर्थिक विकास को बढ़ावा मिलेगा। इसने कहा कि बार-बार चुनावों से नीति निर्माण और प्रशासन में व्यवधान होता है, जिससे सरकार की नीतियों के बारे में अनिश्चितता पैदा होती है।

सीआईआई ने कहा, अधिकारियों को चुनाव ड्यूटी में लगाए जाने से सरकार के कामकाज पर भी असर पड़ता है। चुनाव से पहले निजी क्षेत्र द्वारा निवेश संबंधी निर्णय धीमे हो जाते हैं। इसके अलावा, इससे परियोजना कार्यान्वयन में देरी होती है, क्योंकि आदर्श आचार संहिता लागू हो जाती है। सीआईआई के महानिदेशक चंद्रजीत बनर्जी ने कहा, आर्थिक नुकसान और नीति-निर्माण में सुस्ती को देखते हुए सीआईआई का सुझाव है कि भारत को एक साथ चुनाव के चक्र पर वापस लौटना चाहिए।

दिल्ली में मोहल्ला क्लिनिक में पिछले साल 65000 'फर्जी मरीजों' की चिकित्सकीय जांच की गई: एसीबी

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

नई दिल्ली/भाषा। दिल्ली सरकार की भ्रष्टाचार निरोधक शाखा (एसीबी) की प्रारंभिक जांच से पता चला है कि वर्ष 2023 के 11 महीनों में निजी प्रयोगशालाओं के जरिये 'मोहल्ला क्लीनिक' में 65,000 'फर्जी रोगियों' की चिकित्सकीय जांच की गई। अधिकारियों ने शनिवार को यह जानकारी दी।

उन्होंने कहा कि फरवरी-दिसंबर, 2023 के दौरान दो निजी प्रयोगशालाओं ने लगभग 22 लाख परीक्षण किए, जिनमें से 65,000 फर्जी पाए गए। अधिकारियों ने कहा कि प्रयोगशालाओं को उनके द्वारा किए गए परीक्षणों के लिए सरकार ने 4.63 करोड़ रुपए का भुगतान किया था।

पिछले महीने, दिल्ली के उपराज्यपाल वी.के. सक्सेना ने मोहल्ला क्लीनिक में किए गए प्रयोगशाला परीक्षणों में कथित अनियमितता के मामले की सीबीआई जांच की सिफारिश की थी। गृह मंत्रालय ने इस मामले में सीबीआई को जांच करने का निर्देश दिया है।

एसीबी के एक अधिकारी ने दावा किया कि निजी प्रयोगशालाओं ने कथित तौर पर उन 'फर्जी मरीजों' की जांच की जो कभी किसी मोहल्ला क्लिनिक में नहीं गए थे। उन्होंने कहा कि यह भी सामने आया कि दो निजी प्रयोगशालाओं द्वारा प्रयोगशाला प्रबंधन सूचना प्रणाली (एलआईएमएस) के संचालन में हेर-फेर किया गया, जिसमें रोगियों के नाम और मोबाइल नंबर शामिल होते हैं।

प्रधानमंत्री ने 'सबका साथ, सबका विकास' का नारा दिया, सबका सत्यानाश किया: खरगे

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

नई दिल्ली/भाषा। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने शनिवार को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी पर युवाओं, महिलाओं किसानों और गरीबों को धोखा देने का आरोप लगाया और दावा किया कि भले ही 'सबका साथ, सबका विकास' का नारा दिया गया हो, लेकिन ''सबका सत्यानाश'' किया गया है।

उन्होंने यहां 'न्याय संकल्प सम्मेलन' में कांग्रेस कार्यकर्ताओं का आह्वान किया कि वो न्याय के लिए लड़ाई में राहुल गांधी का साथ दें।

खरगे ने यह दावा भी किया कि झारखंड में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने झारखंड मुक्ति मोर्चा और कांग्रेस के विधायकों को तोड़ने का प्रयास किया, लेकिन वह सफल नहीं हो सकी क्योंकि सभी विधायक डटकर खड़े रहे। उन्होंने आरोप लगाया, ये लोग (भाजपा) कहते हैं कि भाजपा सिद्धांत वाली पार्टी है। यह किस तरह का सिद्धांत है। जिस आदमी को ये लोग पहले भ्रष्ट कहते हैं और जेल में डालते हैं, जब वही भाजपा में शामिल हो जाता है तो क्लीन हो जाता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और गृह मंत्री अमित शाह के पास एक बहुत बड़ी वाशिंग मशीन है। उन्होंने यह आरोप भी लगाया कि भाजपा भावनात्मक कार्ड और धार्मिक कार्ड खेलती है।

हिमाचल: दो दिनों की बर्फबारी के बाद चार राष्ट्रीय राजमार्गों समेत 500 से ज्यादा सड़कें बंद

शिमला/भाषा। हिमाचल प्रदेश के कुछ हिस्सों में लगातार कई दिनों तक हुई मध्यम से भारी बर्फबारी के बाद राज्य में चार राष्ट्रीय राजमार्गों सहित 504 सड़कें यातायात के लिए बंद कर दी गईं। मौसम कार्यालय ने रविवार को राज्य के कई स्थानों पर भारी बर्फबारी का अनुमान जताया है। स्थानीय मौसम विभाग ने शनिवार को कई स्थानों पर आंधी और बिजली गिरने और रविवार को कई स्थानों पर भारी बर्फबारी के साथ तूफान, बिजली गिरने और ओलावृष्टि के लिए 'येलो अलर्ट' जारी किया है।

राज्य में 31 जनवरी और एक फरवरी को कई हिस्सों में मध्यम से भारी बर्फबारी हुई है। राज्य आपातकालीन परिचालन केंद्र के अनुसार, शिमला में सबसे अधिक 161 सड़कें, लाहौल और स्पीति में 153, कुल्लू में 76 और चंबा जिले में 62 सड़कें बंद हैं। पीडब्ल्यूडी अधिकारियों ने बताया कि सड़कों से जल्द से जल्द बर्फ हटाने के लिए सफाई का काम तेजी से चल रहा है। राज्य के अधिकांश हिस्सों में शीत लहर की स्थिति बनी रही, यहां तक कि न्यूनतम तापमान में कुछ डिग्री की वृद्धि हुई, लेकिन यह सामान्य से नीचे रहा।

हिमाचल की फैक्टरी में आग लगने के बाद 13 श्रमिक लापता, बचाव अभियान जारी

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

शिमला/भाषा। हिमाचल प्रदेश में सोलन जिले के बद्दी औद्योगिक क्षेत्र में एक सौंदर्य प्रसाधन उत्पाद बनाने वाले कारखाने में भीषण आग लगने के एक दिन बाद शनिवार को 13 लापता कर्मचारियों के लिए बचाव अभियान चलाया गया। पुलिस ने बताया कि इस हादसे में एक महिला की मौत हो गई है और 31 अन्य घायल हो गए हैं।

आग लगने की घटना शुक्रवार को अपराह्न करीब पौने तीन बजे एनआर अरोमा में हुई और अभी तक उस पर काबू नहीं पाया जा सका है।

सोलन के उपायुक्त मनमोहन शर्मा ने शनिवार को 'पीटीआई-भाषा' को बताया कि घटना के समय करीब 50 लोग इमारत में थे और उनमें से कुछ अपने घर भाग गए जबकि 13 लोगों के अब भी लापता होने की आशंका है। उन्होंने बताया कि घटना की मजिस्ट्रेट जांच के आदेश दिए गए हैं। आग पर अभी काबू नहीं पाया जा सका है क्योंकि परफ्यूम और अन्य सौंदर्य प्रसाधन बनाने में इस्तेमाल होने वाले ज्वलनशील पदार्थ में आग लग गई है।

पुलिस ने बताया कि लापरवाही का एक मामला दर्ज किया गया है और जांच की जा रही है। राष्ट्रीय आपदा मोचन बल, राज्य आपदा मोचन बल, पुलिस, राजस्व और अन्य दल बचाव अभियान में लगे हुए हैं।

शर्मा ने कहा, लोग अपनी जान बचाने के लिए इमारत की पहली और दूसरी मंजिल से कूद गए और उन्हें हाथ, पैर तथा कुछ को तो रीढ़ की हड्डी में भी चोटें आयी हैं। उन्होंने बताया कि आग लगने की वजह अभी पता नहीं चली है और फॉरेंसिक का एक दल जांच कर रहा है।

प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया कि सौंदर्य प्रसाधन सामग्री से निकल रहे धुएं के गुबार के चलते आग पर काबू पाने में बाधा आई और श्रमिक जान बचाने के लिए इमारत की छत पर चढ़ गए।

भारतीय अर्थव्यवस्था की औसत वृद्धि दर 2030-31 तक 6.7 प्रतिशत रहेगी: क्रिसिल

कोलकाता/भाषा। क्रिसिल ने कहा कि वर्तमान दशक के अंत तक भारतीय अर्थव्यवस्था की औसत वार्षिक वृद्धि दर 6.7 प्रतिशत रहने की उम्मीद है। रेटिंग एजेंसी की एक ताजा रिपोर्ट में कहा गया है कि वित्त वर्ष 2023-24 से 2030-31 के बीच अर्थव्यवस्था इस दर से बढ़ेगी। यह दर महामारी से पहले की औसत वृद्धि दर 6.6 प्रतिशत से थोड़ी अधिक है। क्रिसिल के अनुसार इस प्रवृत्ति में पूंजी का मुख्य रूप से योगदान होगा।

रिपोर्ट में कहा गया कि सरकार ने निर्माण गतिविधियों का समर्थन करने के लिए पूंजीगत व्यय में उल्लेखनीय वृद्धि की है और राज्यों के निवेश प्रयासों को बढ़ावा देने के लिए ब्याज मुक्त ऋण दे रही है। क्रिसिल ने कहा कि चालू वित्त वर्ष में 7.3 प्रतिशत की मजबूत वृद्धि के बाद, अगले वित्त वर्ष में इसके 6.4 प्रतिशत रहने का अनुमान है। रिपोर्ट के मुताबिक आरबीआई ब्याज दर के मोर्चे पर सतर्क रहेगा, क्योंकि उसकी नजर मुद्रास्फीति को चार प्रतिशत के स्तर पर लाने पर रहेगी।

नवी मुंबई में पिछले साल अवैध रूप से रह रहे थे 506 विदेशी नागरिक: पुलिस

ठाणे/भाषा। नवी मुंबई पुलिस ने 411 नाइजीरियाई सहित 506 विदेशी नागरिकों का पता लगाया है, जो पिछले साल से यहां अवैध रूप से रह रहे थे। एक वरिष्ठ अधिकारी ने शनिवार को यह जानकारी दी। उन्होंने बताया कि ये लोग या तो उचित दस्तावेज के बिना भारत में दाखिल हुए थे या इनकी वीजा अवधि खत्म हो गई थी। नवी मुंबई के पुलिस प्रमुख मिलिंद भारम्बे ने कहा कि इलाके में नशीली दवाओं की बिक्री पर छापेमारी और तलाशी के दौरान पुलिस को यह जानकारी मिली। उन्होंने कहा, 411 नाइजीरियाई लोगों में कई नशीली दवाओं से संबंधित अपराधों में शामिल पाए गए। पुलिस ने उन मकान मालिकों के खिलाफ भी कार्रवाई शुरू की है, जिन्होंने अपनी संपत्तियों में अवैध रूप से रह रहे विदेशियों को रखा था। नवी मुंबई में अवैध रूप से रहने वाले कुल 483 विदेशियों को देश छोड़ने का नोटिस दिया गया है।

मनरेगा को खत्म करने में लगी है सरकार : कांग्रेस

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

मनरेगा को खत्म करने में लगी है सरकार : कांग्रेस

नई दिल्ली/भाषा। कांग्रेस ने शनिवार को आरोप लगाया कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और उनकी सरकार महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना (मनरेगा) को खत्म करने में लगे हुए हैं। पार्टी महासचिव जयराम रमेश ने यह दावा भी किया कि भाजपा ने पारदर्शिता का बहाना बनाकर कांग्रेस सरकार में शुरू की गई आधार तकनीक को गरीबों के खिलाफ एक हथियार में बदल दिया है।

रमेश ने एक्स पर पोस्ट किया, मनरेगा 2004 के लोकसभा चुनाव के लिए हमारे घोषणापत्र के मुख्य वादों में से एक था। हमने एक साल के भीतर ही अपना यह वादा पूरा करते हुए 2005 में कानून पारित किया और 2006 के शुरुआत में इसे लागू किया। उन्होंने कहा कि यह योजना ग्रामीण भारत के लिए परिवर्तनकारी साबित हुई है।

कांग्रेस महासचिव ने कहा, पिछले 18 वर्षों के अध्ययन से पता चलता है कि इससे ग्रामीण आय में वृद्धि हुई है, ग़रीबी और भुखमरी में कमी आई है और यह महिलाओं और एससी/एसटी/ओबीसी के श्रमिकों के लिए सबसे ज़्यादा लाभदायक साबित हुआ है। रमेश के अनुसार, मनरेगा से श्रमिकों को सम्मान मिलता है क्योंकि इसके तहत रोज़गार अधिकार के रूप में मिलता है, न कि 'रेवड़ी' के रूप में, जैसा कि प्रधानमंत्री बोला करते हैं। उन्होंने आरोप लगाया, नरेन्द्र मोदी का मनरेगा श्रमिकों का अपमान करने का एक लंबा ट्रैक रिकॉर्ड है। वह कहते हैं कि इससे सिर्फ़ ग़रीबों से गड्ढा खुदवाया जाता है। शायद उन्हें इस बात का एहसास नहीं है कि मेहनत से मनरेगा श्रमिक भारत के विकास में योगदान दे रहे हैं - वे सिंचाई टैंक, सड़क, नहर, जंगल, बांध और भी बहुत कुछ बना रहे हैं। 2015 में, प्रधानमंत्री ने कहा कि वह मनरेगा को कांग्रेस की विफलताओं के 'जीवित स्मारक' के रूप में जीवित रखेंगे। लेकिन लॉकडाउन के दौरान उन्हें इसकी कीमत समझ आई होगी, जब मनरेगा ने एक लाख करोड़ से अधिक की आय के साथ पूरे भारत में करोड़ों श्रमिकों को अपनी जीविका चलाने में मदद किया। रमेश ने दावा किया कि प्रधानमंत्री को महामारी के बाद यह एहसास हुआ कि मनरेगा ग्रामीण भारत को फसल के नुक़सान और आर्थिक संकट जैसी आपात स्थितियों के ख़िलाफ़ 'बैकअप' प्रदान करता है।

टीवीएस मोटर भविष्य की प्रौद्योगिकियों पर 5,000 करोड़ रुपए निवेश करेगी

नई दिल्ली/भाषा। टीवीएस मोटर कंपनी ने शनिवार को कहा कि वह भविष्य की प्रौद्योगिकियों के डिजाइन, विकास और तैनाती के लिए 5,000 करोड़ रुपए का निवेश करेगी। टीवीएस मोटर कंपनी के प्रबंध निदेशक सुदर्शन वेणु ने एक बयान में कहा, हमारा आधार इंजीनियरिंग और अनुसंधान एवं विकास है। यह क्षेत्र ठोस डिजाइन और विकास क्षमता वाले 2,000 से अधिक इंजीनियरों द्वारा संचालित है। हमारा लक्ष्य प्रौद्योगिकी के जरिए अपने ग्राहकों के जीवन की गुणवत्ता को बदलना और गतिशीलता के भविष्य को फिर से परिभाषित करना है।

टीवीएस मोटर कंपनी दोपहिया और तिपहिया वाहन बनाती है और अपने कुल उत्पादन का लगभग 30 प्रतिशत निर्यात करती है। कंपनी की 80 देशों में उपस्थिति है। कंपनी ने अपनी निर्यात हिस्सेदारी को बढ़ाकर 50 प्रतिशत तक करने का लक्ष्य तय किया है।

आगामी चुनाव कांग्रेस का अंतिम चुनाव होगा : दुष्यंत

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

जींद (हरियाणा)/भाषा। हरियाणा के उपमुख्यमंत्री दुष्यंत चौटाला ने प्रदेश में आगामी विधानसभा और लोकसभा चुनाव के मद्देनजर कांग्रेस की 'जनसंदेश' यात्रा पर निशाना साधते हुए शनिवार को कहा कि ये चुनाव कांग्रेस का अंतिम चुनाव साबित होगा। इस चुनाव में कांग्रेस का खात्मा होना तय है।

यहां उचाना में संवाददाताओं को संबोधित करते हुए उन्होंने यह दावा किया। वहीं राज्य में विपक्ष के सरकार पर प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) के दुरुपयोग के आरोपों पर पलटवार करते हुए कहा कि विपक्षी नेताओं को यह पहला यह बताना चाहिए कि जब केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) ने अजय चौटाला, ओमप्रकाश चौटाला को सलाखों के पीछे डाला था तब क्या वो तंत्र ठीक था। उन्होंने कहा कि जब सीबीआई ने डॉ. अजय चौटाला को गिरफ्तार किया था तब तो वह हरियाणा सरकार के सदस्य भी नहीं थे बल्कि सांसद थे। दुष्यंत चौटाला ने कहा कि जब इंदिरा गांधी प्रधानमंत्री थी तो पूरे देश में नेताओं को जेल में डाल दिया था और जहां तक बात इन मामलों की है तो इनमें सबूत भी मिले है और गड़बड़ भी। इसके बावजूद भी नेता अपने आप को निर्दोष बताते हैं। उचाना से चुनाव लड़ने को लेकर चल रही अटकलों पर विराम लगाते हुए चौटाला ने कहा कि वह उचाना से चुनाव लड़ेंगे और इसको लेकर भी वह कई बार पहले बोल चुके हैं। चौटाला ने यहां जय बाबा मंशानाथ गौशाला में आठ गौशालाओं को 83 लाख रुपए के चेक भी वितरित किए। चौटाला के यहां पहुंचने पर कार्यकर्ताओं और लोगों ने उनका जोरदार स्वागत किया। चौटाला ने उचाना में विभिन्न योजनाओं के उद्घाटन व शिलान्यास भी किया।

तमिल सुपरस्टार विजय के राजनीति में प्रवेश पर नेताओं ने किया स्वागत

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

चेन्नई। तमिलनाडु के राजनीतिक दलों और नेताओं ने तमिल सुपरस्टार विजय के राजनीति में एंट्री करने का स्वागत किया है। लियो फेम एक्टर विजय ने शुक्रवार को अपनी राजनीतिक पार्टी थमिझागा वेट्री कज़ग की घोषणा की। मारुमलार्ची द्रविड़ मुनेत्र कषगम (एमडीएमके) के संस्थापक और सांसद वाइको ने कहा कि वह राजनीति में विजय के प्रवेश का स्वागत करते हैं।

वाइको ने चेन्नई में मीडियाकर्मियों से बात करते हुए कहा, विजय ने तमिलनाडु के लिए कई अच्छे काम किए हैं और अब वह राजनीति में एंट्री कर रहे हैं। उनके प्रयास राज्य के लिए अच्छे होंगे। उन्होंने यह भी बताया कि भारत जैसे लोकतांत्रिक देश में हर किसी को वोट देने के अधिकार की तरह राजनीतिक पार्टी बनाने का भी अधिकार है। वाइको ने कहा कि तमिल एक्टर विजय के प्रशंसकों की तादाद काफी ज्यादा है। उन्होंने कहा कि इससे उनकी राजनीतिक सफलता में मदद मिलेगी।

तमिलनाडु के खेल विकास और युवा कल्याण मंत्री और डीएमके युवा विंग के अध्यक्ष उदयनिधि स्टालिन ने एक्टर विजय के राजनीति में प्रवेश करने के फैसले का स्वागत किया। उदयनिधि ने मीडियाकर्मियों से बात करते हुए कहा, भारतीय लोकतंत्र में हर किसी को राजनीतिक पार्टी बनाने का अधिकार है। एक्टर विजय ने भी ये फैसला लिया है, मैं उन्हें अपनी शुभकामनाएं देता हूं।

तमिलनाडु भाजपा अध्यक्ष के.अन्नामलाई ने भी तमिल सुपरस्टार के राजनीति में आने के फैसले का स्वागत किया। अन्नामलाई ने एक्स पर पोस्ट करते हुए लिखा, विजय ने भ्रष्ट राजनीति के खिलाफ लड़ने, गैर-पक्षपातपूर्ण और स्वच्छ राजनीति देने और लोगों की सेवा करने के लिए एक राजनीतिक पार्टी (तमिझागा वेट्री कज़गम) लॉन्च की है। मैं इसका स्वागत करता हूं।

नाम तमिलर काची (एनटीके) नेता सीमन ने विजय के राजनीति में कदम रखने पर स्वागत किया है। हालांकि उन्होंने विजय को आगाह किया कि पार्टी बनाना आसान है जबकि राजनीति में बने रहना कठिन काम है। तमिलनाडु कांग्रेस अध्यक्ष के.एस. अलागिरी ने भी विजय के सियासी पारी में एंट्री करने पर स्वागत किया है।

संदिग्ध श्रीलंकाई समुद्री डाकुओं ने तमिलनाडु के मछुआरों पर हमला कर उन्हें लूटा

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

चेन्नई। तमिलनाडु के नागपट्टिनम जिले के तटीय गांव अरकोटुथुराई के पांच मछुआरों पर संदिग्ध श्रीलंकाई समुद्री डाकुओं ने समुद्र के बीच में हमला कर उनका सामान लूट लिया। शनिवार तड़के नागपट्टिनम लौटे मछुआरों ने शुक्रवार रात समुद्र के बीच में हुई घटना के बारे में बताया और वेदारण्यम पुलिस स्टेशन में शिकायत दर्ज कराई। मछुआरों ने पुलिस को दी अपनी शिकायत में कहा कि जब वे कोडियाक्कराई तट के दक्षिण-पूर्व में लगभग 16 समुद्री मील दूर मध्य समुद्र में मछली पकड़ रहे थे, तो उन पर हमला किया गया और उनका सामान लूट लिया गया।

पुलिस सूत्रों ने आईएएनएस को बताया कि वेदारण्यम के पास अर्कोटुथुराई के. पोन्नुथुराई (51) और एस. जयचंद्रन (40) शुक्रवार दोपहर अपने गांव से एक फाइबरग्लास नाव में समुद्र में गए। उसी गांव के जी. रमन (51), आर. रमेश (28) और जे. शिवकुमार (40) भी एक अन्य फाइबरग्लास नाव में समुद्र में उतरे थे।

जब मछुआरों के दोनों समूह आधी रात के आसपास कोडियाक्कराई तट से लगभग 20 समुद्री मील दक्षिण-पूर्व में अलग-अलग मछली पकड़ रहे थे, तो चार लोग जिन पर श्रीलंकाई होने के संदेह था उन्होंने मछली पकड़ने वाली नौकाओं को रोक लिया। मछुआरों के अनुसार, संदिग्ध समुद्री लुटेरों ने उन पर हमला किया और उन्हें लूट लिया।

पुलिस सूत्रों ने बताया कि मछुआरों ने शिकायत दर्ज कराई है कि लुटेरे उनसे ग्लोबल पोजिशनिंग सिस्टम (जीपीएस) गैजेट, एक मोबाइल फोन और एक स्मार्टवॉच छीन ले गए। नागपट्टिनम जिले के मछुआरों को समुद्र के बीच में कई हमलों का सामना करना पड़ा है और पिछले साल अगस्त और दिसंबर के बीच कम से कम आठ ऐसी घटनाएं दर्ज की गईं थीं। हालांकि, पुलिस ने कहा कि 2024 में यह पहली ऐसी घटना है।

तटीय सुरक्षा समूह की वेदारण्यम समुद्री पुलिस ने जांच शुरू कर दी है। मछुआरों के लीडर आर. पेरियास्वामी ने आईएएनएस को बताया, ''समुद्र में हम पर हर तरह के हमले हो रहे हैं। श्रीलंकाई नौसेना और संदिग्ध श्रीलंकाई लुटेरे हमारा जीवन दयनीय बना रहे हैं। हमें समुद्री डाकुओं के इन हमलों और डकैती तथा श्रीलंकाई नौसेना द्वारा गिरफ्तारी को रोकने के लिए केंद्र और राज्य सरकारों से कड़ी प्रतिक्रिया की आवश्यकता है।''

सद्गुरु के 'लीडरशिप' कार्यक्रम में 100 से अधिक अधिकारियों ने हिस्सा लिया

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

कोयबम्टूर। यहां ईशा फाउंडेशन ने कोयंबटूर के ईशा योग केंद्र में इनर इंजीनियरिंग लीडरशिप प्रोग्राम के अंतर्गत अब तक 800 से अधिक सिविल सेवकों को प्रशिक्षित किया जा चुका है।

भारत सरकार के कार्मिक और प्रशिक्षण विभाग ने ईशा फाउंडेशन के सहयोग से भारतीय प्रशासनिक सेवा, भारतीय पुलिस सेवा, भारतीय वन सेवा और अन्य केंद्रीय सिविल सेवा के 100 से अधिक अधिकारियों के लिए 5 दिवसीय इन-सर्विस लीडरशिप कार्यक्रम का आयोजन किया।

सद्गुरु द्वारा विशेष रूप से डिज़ाइन इनर इंजीनियरिंग लीडरशिप रिट्रीट कार्यक्रम 29 जनवरी से 2 फरवरी के बीच तमिलनाडु के कोयंबटूर स्थित ईशा योग केंद्र में आयोजित किया गया।

कार्यक्रम में सद्गुरु द्वारा निर्देशित ध्यान सत्र, योग मुद्राओं का एक समग्र सेट, सद्गुरु के साथ आकर्षक बातचीत के साथ अधिकारियों को 21 मिनट के शक्तिशाली योग अभ्यास शांभवी महामुद्रा क्रिया में भी दीक्षित किया गया, जो इंसान के अंदर स्वास्थ्य, आनंद और उत्साह की नींव बनाकर आनंद की अवस्था बनाने में मदद करता है।

आध्यात्मिक गुरु वासुदेव ने 'एक्स' पर पोस्ट किया, इतने सारे सिविल सेवा अधिकारियों को आंतरिक कल्याण और उच्चतर संभावनाओं के लिए प्रयास करते देखना अद्भुत है...शुभकामनाएं।

अशोक लेलैंड ने 14टी बॉस इलेक्ट्रिक ट्रक की चाबियां बिलियन ई-मोबिलिटी को सौंपीं

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

चेन्नई। हिंदुजा समूह की प्रमुख कंपनी अशोक लेलैंड ने अपने ग्राहकों के लिए 'इंटरमीडिएट' और 'हेवी ड्यूटी' इलेक्ट्रिक ट्रकों की आपूर्ति शुरू कर दी है। कंपनी ने बयान में कहा कि नई दिल्ली में 'भारत मोबिलिटी' वैश्विक प्रदर्शनी 2024 में 14टी बॉस इलेक्ट्रिक ट्रक की चाबियां बिलियन ई-मोबिलिटी को सौंपी गईं।

कंपनी के प्रबंध निदेशक (एमडी) और मुख्य कार्यपालक अधिकारी (सीईओ) शेनू अग्रवाल ने शनिवार को बयान में कहा, अशोक लेलैंड को आज अपने ग्राहक को पहला पूर्ण इलेक्ट्रिक वाहन देने पर गर्व है। बॉस 14टी इलेक्ट्रिक ट्रक को पिछले साल वाहन प्रदर्शनी में पेश किया गया था। आज, इस उत्पाद की आपूर्ति पर्यावरण-अनुकूल और कुशल परिवहन की दिशा में हमारी यात्रा में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है।

नई दिल्ली के भारत मंडपम में चल रही भारत मोबिलिटी वैश्विक प्रदर्शनी में अशोक लेलैंड ने अपने आगामी वाहनों- 9एम हाइड्रोजन फ्यूल सेल बस, एवीटीआर एलएनजी 64 ट्रैक्टर, 55टी ईवी ट्रैक्टर और स्विच आईईवी4 इलेक्ट्रिक हल्का वाणिज्यिक वाहनों को पेश किया।

उच्च शिक्षा मंत्री राज्यपाल के कार्यक्रम में शामिल नहीं हुए

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

तिरुनेलवेली। तमिलनाडु के उच्च शिक्षा मंत्री आर. एस. राजकन्नप्पन मनोनमनियम सुंदरनार शनिवार को विश्वविद्यालय के 30वें दीक्षांत समारोह में शामिल नहीं हुए, जिसमें राज्यपाल आर. एन. रवि ने छात्रों को डिग्री और पदक प्रदान किये। मंत्री द्वारा दीक्षांत समारोह से दूर रहने का कोई आधिकारिक कारण नहीं बताया गया है। द्रविड़ मुन्नेत्र कषगम (द्रमुक) के संस्थापक और पूर्व मुख्यमंत्री सी.एन. अन्नादुराई की 55वीं पुण्य तिथि के दिन दीक्षांत कार्यक्रम का आयोजन किया गया था। पुण्यतिथि के मौके पर पार्टी नेताओं और कार्यकर्ताओं ने चेन्नई व राज्य के विभिन्न हिस्सों में विशाल रैलियों में भाग लिया और अन्नादुरई को श्रद्धांजलि अर्पित की। हाल ही में अलगप्पा विश्वविद्यालय में हुए राज्यपाल के कार्यक्रम में भी मंत्री सुंदरनार शामिल नहीं हुए थे।

आंध्र में 3 दिवसीय धर्मिका सम्मेलन शुरू

चेन्नई/तिरुमला। आंध्र प्रदेश में स्थित तिरुमला तिरुपति देवस्थानम (टीटीडी) के सहयोग से हिंदू धर्म प्रचार परिषद (एचडीपीपी) के तत्वाधान में आयोजित तीन दिवसीय श्री वेंकटेश्वर धर्मिका सम्मेलन शनिवार को यहां श्रीवारी अस्थान मंडपम में शुरू हुआ। टीटीडी के अध्यक्ष भुमना करुणाकर रेड्डी ने कहा कि सम्मेलन भारत में आध्यात्मिक आंदोलन लाएगा और मानवीय मूल्यों एवं भक्ति आंदोलन को पुनर्जीवित करने में मदद करेगा। इसका उद्देश्य इसे हिंदू-प्रसार आंदोलन में बदलना और पूरे देश में धर्म का प्रचार करना है। सम्मेलन में लिए गए निर्णय हिंदू धर्म प्रचार परिषद को और मजबूत करेंगे और धर्म का प्रसार करेंगे।

टीटीडी कई आध्यात्मिक, धर्मार्थ और सामाजिक कार्यक्रम आयोजित कर रहा है।

द्रमुक सांसद आठ फरवरी को संसद परिसर में प्रदर्शन करेंगे

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

चेन्नई। तमिलनाडु में सत्तारूढ़ द्रविड़ मुनेत्र कषगम (द्रमुक) ने 2024-25 के अंतरिम बजट में राज्य को आवश्यक धन का 'आवंटन नहीं करने' पर केंद्र सरकार के विरोध में आठ फरवरी को संसद परिसर में गांधी प्रतिमा के पास 'काली कमीज' पहनकर प्रदर्शन करने की शनिवार को घोषणा की। द्रमुक सांसद एवं पार्टी के संसदीय दल के नेता टी. आर. बालू ने हाल में आए चक्रवात, बारिश और बाढ़ से हुई क्षति से उत्पन्न स्थिति से निपटने के लिए राज्य को उचित रूप से धन नहीं देने को केंद्र सरकार का 'पक्षपात' बताया। उन्होंने कहा कि कांग्रेस सहित गठबंधन के अन्य दलों के सांसदों से प्रदर्शन में शामिल होने का अनुरोध किया गया है।

दिसंबर 2023 में चक्रवात, अभूतपूर्व बारिश और बाढ़ के बाद लगभग 37,000 करोड़ रुपये की राहत की मांग करने वाले तमिलनाडु के लिए अंतरिम बजट में कोई घोषणा नहीं की गई। द्रमुक ने विज्ञप्ति में कहा, इसके अलावा मदुरै में अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान की स्थापना सहित तमिलनाडु की विकास परियोजनाओं के लिए धन आवंटन पर अंतरिम बजट में कोई घोषणा नहीं की गई। द्रमुक सांसद आठ फरवरी को सुबह 10 बजे संसद परिसर में गांधी प्रतिमा के पास धरना प्रदर्शन करेंगे। पार्टी के अध्यक्ष और मुख्यमंत्री एम.के. स्टालिन ने तमिलनाडु को 'वित्तीय आवंटन पर कोई घोषणा नहीं करने' के लिए केंद्र सरकार की निंदा की।

नेताओं ने भाजपा नेता आडवाणी को भारत रत्न देने पर बधाई दी

बेंगलूरु। कर्नाटक के नेताओं ने शनिवार को वरिष्ठ भाजपा नेता लाल कृष्ण आडवाणी को 'भारत रत्न' से सम्मानित करने के केंद्र के फैसले का स्वागत किया। पूर्व मुख्यमंत्री और भाजपा के वरिष्ठ नेता बी.एस. येडीयुरप्पा ने फैसले की सराहना की। उन्होंने यहां संवाददाताओं से कहा, 'अगर आज अयोध्या में राम मंदिर है तो यह लाल कृष्ण आडवाणी के कारण है। बाबरी मस्जिद ढहाए जाने के समय आडवाणी वहां मौजूद थे।'

वरिष्ठ नेता येडीयुरप्पा ने कहा, ''मैं भाग्यशाली हूं कि उस जनसभा में शामिल हुआ, जिसे लाल कृष्ण आडवाणी ने बाबरी मस्जिद के विध्वंस के दौरान संबोधित किया था।'' उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा लाल कृष्ण आडवाणी को भारत रत्न देने की घोषणा से हर कोई खुश है।

जनता दल (एस) के नेता एच.डी. कुमारस्वामी ने भारत रत्न मिलने पर आडवाणी को शुभकामनाएं दीं। कुमारस्वामी ने 'एक्स' पर कहा, ''भाजपा के दिग्गज नेता और पूर्व उपप्रधानमंत्री लालकृष्ण आडवाणी को हार्दिक बधाई, जिन्हें देश के सर्वोच्च नागरिक सम्मान भारत रत्न' से सम्मानित किया गया है।'' उडुप्पी में पेजावर मठ के संत विश्व प्रसन्न तीर्थ ने केंद्र सरकार के इस कदम की सराहना की। उन्होंने आडवाणी को मूल्य-आधारित राजनीति का प्रतिनिधि बताया, जिन्होंने अपने पद की गरिमा बनाए रखी।

केनरा बैंक ने होम लोन मेले का शुभारंभ किया

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

बेंगलूरु। केनरा बैंक ने शनिवार को यहां नेक्सस व्हाइटफील्ड मॉल में होम लोन मेले का शुभारंभ किया। इसमें संपत्तियों और होम लोन उत्पादों की शृंखला प्रदर्शित की जाएगी। कार्यक्रम का उद्घाटन कार्यकारी निदेशक हरदीप सिंह अहलूवालिया ने किया। इस कार्यक्रम में शहर के सभी शीर्ष बिल्डर अपनी विभिन्न परियोजनाओं का प्रदर्शन कर रहे हैं। केनरा बैंक अपने ग्राहकों को आकर्षक सुविधाओं के साथ अपने ऋण उत्पाद भी पेश कर रहा है।

असफलताओं को छिपाने के लिए चली जा रही ये चाल : भाजपा

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

बेंगलूरु। भाजपा के नेतृत्व वाली केंद्र सरकार पर कर्नाटक के साथ सौतेले व्यवहार करने का आरोप लगाते हुए उपमुख्यमंत्री डी.के. शिवकुमार ने 7 फरवरी को नई दिल्ली में विरोध प्रदर्शन करने की घोषणा की, जिसके चलते सत्तारूढ़ कांग्रेस और भाजपा के बीच राजनीतिक खींचतान बढ़ गई है।

भाजपा ने कहा है कि कांग्रेस सांसद डीके सुरेश के दक्षिणी राज्य को एक अलग देश बनाने वाले बयान और हनुमान ध्वज हटाने के विवाद से हुए नुकसान पर कांग्रेस पर्दा डालना चाहती है। कांग्रेस सांसद डीके सुरेश के 'दक्षिण भारत के लिए अलग राष्ट्र' वाले बयान और हनुमान ध्वज हटाने के विवाद से हुए नुकसान को कांग्रेस छिपाना चाहती है। सूत्रों ने कहा कि कर्नाटक बीजेपी ने 7 फरवरी को कर्नाटक सरकार द्वारा प्रस्तावित विरोध को राम मंदिर उद्घाटन सहित राज्य में कई घटनाओं पर अपनी गंभीर प्रतिक्रिया को कवर करने के लिए एक सोचा-समझा प्लान करार दिया है।

कांग्रेस पार्टी अयोध्या में श्री राम मंदिर के उद्घाटन के बाद भाजपा को मिली लाभप्रद स्थिति से परेशान है। चूंकि सीएम सिद्दरामैया खेमे के मंत्रियों द्वारा भगवान राम और अयोध्या में मंदिर के खिलाफ अपमानजनक टिप्पणियों की भारी आलोचना हुई, इसलिए उन्हें 'तिलक' लगाने के लिए मजबूर किया गया और दावा किया गया कि वह भी एक भक्त हैं।

कांग्रेस सरकार मंड्या जिले के केरागोडु गांव में हनुमान ध्वज को हटाने के कारण हुए झटके से निपटने की कोशिश कर रही है, इसलिए बजरंग दल और विश्व हिंदू परिषद (वीएचपी) के नेतृत्व में हिंदू संगठनों ने राज्यव्यापी हनुमान ध्वज अभियान शुरू किया है और हर घर में भगवा झंडा फहराने का लक्ष्य रखा है।

भाजपा के सूत्रों ने कहा कि इस आंदोलन से भगवा पार्टी को प्रभावशाली वोक्कालिगा समुदाय के गढ़ माने जाने वाले दक्षिण कर्नाटक के जिलों में पैठ बनाने में मदद मिलेगी। चूंकि जद (एस), जो इस क्षेत्र में अपनी मुख्य ताकत पाता है, भाजपा की सहयोगी है, भाजपा आत्मविश्वास से भरी हुई है। उपमुख्यमंत्री शिवकुमार ने शुक्रवार को कहा, 'मैं कर्नाटक की तुलना गुजरात से नहीं कर रहा हूं। हम सिर्फ अपना उचित हिस्सा मांग रहे हैं। हमने सोचा कि 'डबल इंजन सरकार' ने कर्नाटक की मदद की होगी। लेकिन एक विस्तृत विश्लेषण से पता चलता है कि केंद्रीय बजट का आकार दोगुना होने के बावजूद राज्य को 62,000 करोड़ रुपये का नुकसान हुआ है।' 'कर्नाटक को केंद्रीय बजट में एक कद्दा सौदा मिल रहा है। इससे राज्य को पिछले 5 सालों में लगभग 62,000 करोड़ रुपये के राजस्व का नुकसान हुआ है। 7 फरवरी को होने वाले विरोध प्रदर्शन में मुख्यमंत्री सिद्दरामैया, कैबिनेट मंत्री, विधायक और एमएलसी भी हिस्सा लेंगे। हमने विरोध प्रदर्शन स्थल के बारे में केंद्र को लिखा है।'

उन्होंने विपक्षी दलों के विधायकों और एमएलसी से भी राज्य के लिए न्याय की मांग के लिए विरोध प्रदर्शन का हिस्सा बनने का आग्रह किया है। उन्होंने कहा, ''केंद्रीय बजट का आकार जो 2018-19 में 24.5 लाख करोड़ था वह 2023-24 में दोगुना होकर 45 लाख करोड़ हो गया है लेकिन राज्य को इसका कोई फायदा नहीं हुआ है। हालांकि बजट का आकार दोगुना हो गया है, लेकिन कर्नाटक के लिए अनुदान 2018-19 में 46,000 करोड़ रुपये से थोड़ा बढ़कर 2022-23 में 50,000 करोड़ रुपये हो गया है।''

भाजपा कर्नाटक के महासचिव वी. सुनीलकुमार ने राज्य को खराब आवंटन को लेकर नई दिल्ली में विरोध प्रदर्शन करने के कांग्रेस सरकार के कदम को हास्यास्पद करार दिया। उन्होंने कहा, 'इरादा कांग्रेस सांसद डीके सुरेश के 'देश को बांटने वाले' बयान से ध्यान भटकाने का है। मैं कांग्रेस सरकार से 2004 से 2014 के यूपीए शासनकाल और 2014 से आज तक पीएम मोदी के नेतृत्व वाली सरकार के शासनकाल के दौरान कर्नाटक राज्य को केंद्र सरकार द्वारा दिए गए अनुदान पर एक श्वेतपत्र लाने का आग्रह करता हूं।'

न्यायमूर्ति पी एस दिनेश कुमार ने कर्नाटक उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश के रूप में शपथ ली

बेंगलूरु। न्यायमूर्ति प्रतिनिधि श्रीनिवासाचार्य दिनेश कुमार ने शनिवार को कर्नाटक उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश के रूप में शपथ ली।

राज्यपाल थावरचंद गहलोत ने उन्हें पद की शपथ दिलाई। मुख्यमंत्री सिद्दरामैया और राज्य के कानून एवं संसदीय कार्य मंत्री एच के पाटिल भी इस दौरान मौजूद थे।

न्यायमूर्ति कुमार का जन्म 25 फरवरी 1962 को हुआ था। वह बेंगलूरु के नेशनल कॉलेज और बीएमएस कॉलेज के पूर्व छात्र हैं। उन्हें दो जनवरी, 2015 को कर्नाटक उच्च न्यायालय के अतिरिक्त न्यायाधीश और 30 दिसंबर, 2016 को स्थायी न्यायाधीश के रूप में नियुक्त किया गया था।

न्यायमूर्ति कुमार ने 1990 में कर्नाटक उच्च न्यायालय से वकालत की शुरुआत की थी। न्यायमूर्ति कुमार को 1998 में केंद्र सरकार का अतिरिक्त स्थायी वकील और 2003 में वरिष्ठ स्थायी वकील के रूप में नियुक्त किया गया था।

उन्होंने केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई), भारत संचार निगम लिमिटेड (बीएसएनएल), संघ लोक सेवा आयोग (यूपीएससी), विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) के लिए पैरवी की थी।

कर्नाटक में लोगों को सौहार्द्र के साथ रहना चाहिए : उपमुख्यमंत्री शिवकुमार

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

बेंगलूरु। कर्नाटक के उपमुख्यमंत्री डी.के. शिवकुमार ने शनिवार को एक मठ के पुजारी के आरोपों पर बयान जारी कर कहा कि राज्य में लोगों को सौहार्द्रपूर्ण ढंग से रहना चाहिए और धार्मिक तनाव नहीं फैलाना चाहिए।

एक पुजारी ने कथित तौर पर आरोप लगाया कि उन्हें कर्नाटक में एक मंदिर में प्रवेश करने से रोका गया था। उपमुख्यमंत्री ने आरोपों पर प्रतिक्रिया देते हुए कहा, ''कर्नाटक में कोई अस्पृश्यता नहीं है। हम सब एक हैं और हमें सौहार्द्रपूर्वक रहना चाहिए। मंदिर सभी लोगों के लिए खुले रहेंगे।''

शिवकुमार ने बताया कि उन्हें इस घटना की जानकारी मीडिया के माध्यम से मिली और वह इस मुद्दे पर मुजाराई विभाग के अधिकारियों और जिला प्रभारी मंत्री के साथ चर्चा करेंगे।

उन्होंने कहा, कुरुबा समुदाय के एक पुजारी के मंदिर में प्रवेश करते ही मंदिर की सफाई कर दी गई। मैं फिर कभी चेन्नाकेशव मंदिर के अंदर अपने पैर नहीं रखूंगा।

उन्होंने कहा कि वह वैकुंठ एकादशी के अवसर पर मंदिर गये थे। जबकि पुजारियों से जुड़ी सभी महिलाओं को मंदिर के अंदर जाने दिया गया था, लेकिन मठ का पुजारी होने के बावजूद उन्हें मंदिर में प्रवेश करने की इजाजत नहीं दी गई थी।

उन्होंने कहा, मुझे नहीं पता था कि मंदिर मुजराई विभाग के अधीन है। यदि मुझे पता होता तो मैं संत कनकदास की तरह विरोध-प्रदर्शन करता।

विकसित भारत के निर्माण में चिकित्सक निभाएं अपनी भूमिका : मांडविया

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

जोधपुर । केन्द्रीय चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मंत्री मनसुख मांडविया ने कहा कि सभी चिकित्सकों को अपने सामथ्र्य तथा कर्तव्यपरायणता के साथ काम कर वर्ष 2047 तक देश को विकसित बनाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभानी है। मांडविया शनिवार को मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा, केन्द्रीय जलशक्ति मंत्री गजेन्द्र सिंह शेखावत की उपस्थिति में जोधपुर के अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान के चैथे दीक्षांत समारोह में मुख्य अतिथि के तौर पर संबोधित कर रहे थे।

उन्होंने दीक्षांत समारोह में उपाधि प्राप्त करने वाले चिकित्सकों को बधाई देते हुए कहा कि हमारे देश में चिकित्सक को कमर्शियल प्रोफेशन ना मानकर सेवा का दर्जा दिया जाता है ऐसे में सभी चिकित्सक मरीज की सेवा को सर्वोच्च मानकर अपना कर्तव्य निभाएं। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी का मानना है कि अगर 140 करोड़ भारतीय एक संकल्प के साथ कार्य करेंगे तो देश बहुत आगे बढ़ जाएगा।

कार्यक्रम में मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि राज्य सरकार सभी स्वास्थ्य सूचकांकों में राज्य को देश में अग्रणी बनाने के लिए प्रतिबद्ध है तथा सरकार द्वारा संकल्प पत्र में शामिल चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सुविधाओं के सुदृढ़ीकरण से जुड़े सभी बिन्दुओं को सौ प्रतिशत अमल में लाया जाएगा। उन्होंने कहा कि प्रदेष में स्वास्थ्य सेवाओं के उन्नयन से जुड़े कार्य को बढ़ावा देने के लिए प्रधानमंत्री स्वास्थ्य सुरक्षा योजना के तहत केन्द्र सरकार ने 120 करोड़ रुपये की सहायता प्रदान की है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि बीते एक दशक के दौरान यशस्वी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारत चिकित्सा क्षेत्र के मानकों में बेहतर स्थिति में आ गया है। देश में मेडिकल कॉलेजों की संख्या 381 से बढ़कर 706 हो गई है तथा एमबीबीएस सीटों की संख्या 54 हजार 348 से बढ़कर एक लाख 9 हजार से ज्यादा हो गई है। उन्होंने कहा कि केन्द्र सरकार के अथक प्रयासों से वर्तमान में देश में 834 लोगों की आबादी पर एक डॉक्टर उपलब्ध है जिससे देश को पहले से कहीं ज्यादा चिकित्सक प्रतिवर्ष मिल रहे है।

शर्मा ने डिग्री प्राप्त करने पर सभी चिकित्सकों को बधाई देते हुए कहा कि आपका हर कार्य सेवा माना जाता है तथा चिकित्सक अपने मरीज के लिए 24 घंटे उपलब्ध होते हैं जो सबसे बड़ा धर्म है। उन्होंने कहा कि गांव- ढाणी में जब चिकित्सक जाता है तो उसे भगवान की दृष्टि से देखा जाता है ऐसे में सभी चिकित्सकों को भी अपनी जिम्मेदारी निभाकर उनका इलाज करना चाहिए। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार का संकल्प है कि मूलभूत चिकित्सा सेवाओं को जन-जन तक पहुंचाया जाएगा तथा आमजन को सस्ती एवं बेहतरीन स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध करवाई जाएगी।

शर्मा ने राज्य में चिकित्सा के क्षेत्र में हो रहे कार्यों का उल्लेख करते हुए कहा कि देश में अंगदान की ऑनलाइन रजिस्ट्री में राजस्थान पहले स्थान पर है। उन्होंने कहा कि राज्य में 63 लाख लोगों के आयुष्मान भारत कार्ड की ईकेवाईसी हुई है तथा 9 हजार 947 स्वास्थ्य केन्द्रों को आयुष्मान आरोग्य मंदिर के रूप में परिवर्तित कर दिया गया है। ये आरोग्य मंदिर बेहतर उपचार के साथ-साथ प्रिवेंटिव एवं प्रमोटिव हैल्थ सर्विस भी उपलब्ध करवाएंगे।

इस अवसर पर केन्द्रीय जलशक्ति मंत्री गजेन्द्र सिंह शेखावत ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में देश स्वास्थ्य सूचकांकों में वृद्धि कर रहा है तथा अब चिकित्सा व्यवस्था को और अधिक सुदृढ़ किया जाएगा। उन्होंने बताया कि जोधपुर एम्स में डीमार्ट के संस्थापक राधाकृष्ण दमानी द्वारा 100 करोड रुपए के सामाजिक उत्तरदायित्व अंशदान की सहमति दी गई है जो हम सभी के लिए हर्ष का विषय है।

राजस्थान के कई इलाकों में बूंदाबांदी

जयपुर। पश्चिमी विक्षोभ के असर से राजस्थान के अनेक इलाकों में शनिवार सुबह बूंदाबांदी हुई। मौसम केंद्र (जयपुर) के अनुसार, गत 24 घंटे में कोलायत एवं नोखा में एक-एक मिलीमीटर और जैसलमेर में 0.5 मिलीमीटर बारिश हुई। कई अन्य इलाकों में भी बूंदाबांदी हुई। इस दौरान करौली में न्यूनतम तापमान 5.5 डिग्री सेल्सियस, अलवर में 5.6 डिग्री, पिलानी में 6.8 डिग्री, सिरोही एवं संगरिया में 9.7 डिग्री तथा गंगानगर में 10.0 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया।

बदलते मौसम के साथ राज्य के अनेक हिस्सों में न्यूनतम तापमान धीरे-धीरे बढ़ रहा है। राज्य की राजधानी जयपुर में इस दौरान अधिकतम व न्यूनतम तापमान क्रमश: 24.8 डिग्री और 12.1 डिग्री सेल्सियस रहा।

आडवाणी को भारत रत्न दिए जाने पर मुख्यमंत्री भजनलाल सहित अन्य नेताओं ने खुशी जाहिर की

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

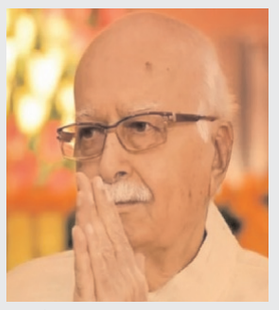

जयपुर। राजस्थान के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा, विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी सहित कई नेताओं ने पूर्व उपप्रधानमंत्री लालकृष्ण आडवाणी को भारत रत्न दिए जाने की घोषणा पर खुशी जताते हुए उन्हें शुभकामनाएं दीं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने शनिवार को भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के वरिष्ठ नेता और पूर्व उपप्रधानमंत्री लालकृष्ण आडवाणी को देश के सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार भारत रत्न से सम्मानित किया जाने की घोषणा की थी।

मुख्यमंत्री शर्मा ने 'एक्स' पर लिखा, भारतीय लोकतंत्र की उत्कृष्ट परंपराओं के प्रबल संवाहक, भाजपा परिवार के दृढ़ स्तंभ, प्रखर राष्ट्रवादी, लोकप्रिय जननेता, पूर्व उप प्रधानमंत्री आदरणीय लालकृष्ण आडवाणी को भारत रत्न से सम्मानित किए जाने पर अनंत आत्मीय शुभकामनाएं। उन्होंने लिखा कि सार्वजनिक जीवन में आडवाणी की दशकों लंबी सेवा को पारदर्शिता और अखंडता के प्रति अटूट प्रतिबद्धता द्वारा चिह्नित किया गया है, जिसने राजनीतिक नैतिकता में एक अनुकरणीय मानक स्थापित किया है। उन्होंने राष्ट्रीय एकता और सांस्कृतिक पुनरुत्थान को आगे बढ़ाने की दिशा में अद्वितीय प्रयास किए हैं।

शर्मा के अनुसार, भारत की विकास यात्रा और भव्य राम मंदिर निर्माण के संकल्प को साकार करने में आडवाणी का योगदान अतुलनीय है।' विधानसभा अध्यक्ष देवनानी ने इस घोषणा पर खुशी जताते हुए एक बयान में कहा, 'आडवाणी का संपूर्ण जीवन राष्ट्र तथा समाज के उत्थान के लिए समर्पित रहा है। अपने राजनीतिक कौशल, प्रशासकीय अनुभव और विकासोन्मुखी दृष्टिकोण से आडवाणी ने भारत के भविष्य की नींव रखी और राष्ट्र निर्माण में जुटे रहें। हम सभी के लिए उनकी तपस्या, त्याग, संघर्ष और समर्पण प्रेरणा का अमृत पुंज है।' भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष जोशी सहित अन्य नेताओं ने भी इस घोषणा पर खुशी जताते हुए आडवाणी को बधाई दी है तथा प्रधानमंत्री मोदी का आभार व्यक्त किया।

पूर्व ऑस्ट्रेलियाई प्रधानमंत्री टर्नबुल ने मोदी को एक प्रेरक नेता बताया

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

जयपुर। ऑस्ट्रेलिया के पूर्व प्रधानमंत्री मैल्कम टर्नबुल ने ऑस्ट्रेलिया-भारत की मित्रता को 10 में से 10 अंक दिए और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को एक प्रेरक नेता बताया जो बहुत बड़ा बदलाव ला रहे हैं। टर्नबुल की 2017 में भारत की पहली यात्रा के दौरान आयी कई तस्वीरों में दोनों नेताओं के बीच नजदीकी दिखायी दी थी। उसके बाद वह सेवानिवृत्त हो गए और अब अपनी पत्नी के साथ भारत की यात्रा कर रहे हैं।

जयपुर साहित्य उत्सव (जेएलएफ) के 17वें संस्करण के वक्ताओ में से एक टर्नबुल ने 2017 में भारत की अपनी खूबसूरत यात्रा और प्रधानमंत्री मोदी के साथ बिताए वक्त को याद किया। टर्नबुल ने कहा, मेरी यहां की यात्रा बहुत अच्छी रही थी। मैं हाल में हमारे पुराने मित्र शिंजो आबे के अंतिम संस्कार में जापान में उनसे (मोदी) मिला था...मैंने श्रीमान मोदी के साथ भरपूर आनंद लिया। मैं जानता हूं कि वह स्वाभाविक रूप से अपने देश में एक विवादास्पद नेता हैं। लेकिन बाहर से देखने पर वह एक प्रेरक नेता हैं और साफ तौर पर वह बड़ा बदलाव ला रहे हैं।

ऑस्ट्रेलिया के 29वें प्रधानमंत्री रहे टर्नबुल ने कहा कि दोनों देशों में कई चीजें एक समान हैं जैसे कि क्रिकेट के लिए प्यार, कानून का शासन और लोकतंत्र तथा उनकी मित्रता को 10 में से 10 अंक दिए जा सकते हैं। उन्होंने कहा कि सिर्फ एक समस्या है कि हमारे बीच पर्याप्त व्यापार नहीं है।

टर्नबुल ने कहा, जब हम पहली बार मिले थे तो मोदी ने कहा था 'आपने अपने जीवन में बहुत सारा अंतरराष्ट्रीय व्यापार किया है, आपने चीन के साथ काफी व्यापार किया है, आपने भारत के साथ इतना कम व्यापार क्यों किया है?' मैंने कहा, सच कहूं तो, भारत में किसी विदेशी निवेशक के लिए व्यापार करना काफी मुश्किल है और उन्होंने इसे माना।

विदेशी उद्यमियों को खूब लुभा रहा है इंडिया स्टोनमार्ट

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

जयपुर। खनिज पत्थर एवं इस पर आधारित उद्योग किसी भी देश-प्रदेश के औद्योगिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। राजस्थान को खनिज पत्थर की विविधता एवं विपुलता का गौरव हासिल है। यह राज्य खनिज पत्थर के निर्यात में भी अग्रणी है। अपनी ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक विविधता के लिए विश्व स्तर पर अपनी विशिष्ट पहचान रखने वाला राजस्थान अब पर्यटन के साथ-साथ व्यापारिक महत्व के लिए भी विदेशियों को लुभा रहा है। अब विदेशी उद्यमी भी 'पधारो म्हारे देश' के आतिथ्य को स्वीकार कर रहे हैं।

जयपुर एग्जीबिशन एंड कन्वेंशन सेंटर में 1 फरवरी से आयोजित हो रहे इंडिया स्टोनमार्ट के 12वें संस्करण में इसकी बानगी देखने को मिल रही है, जहां विश्व के कई प्रमुख देशों के पत्थर उद्योग की नामी कम्पनियां, कंपनी समूह, स्टोन इंडस्ट्रीज एसोसिएशन्स के प्रतिनिधि एवं खरीददार अपने उत्पादों की मार्केटिंग, प्रदर्शित करने अथवा व्यापारिक पूछताछ के लिए सात समंदर पार स्टोनमार्ट पहुंचे हैं।

देश की इस प्रमुख प्रदर्शनी में अपने उत्पादों की मार्केटिंग के लिए इटली से आए जीडीए मार्बल एंड ग्रेनाइट के प्रतिनिधि एंटोनिया डिमारिया बताते हैं कि उनका व्यापारिक संगठन पत्थर उद्योग के पुराने संगठन में से एक है और वे अपने उत्पादों को प्रदर्शित करने के लिए जयपुर आना पसंद करते हैं। क्योंकि विश्व प्रसिद्ध ऐतिहासिक एवं पर्यटन स्थल होने से यहां व्यावसायिक दृष्टि से अपार संभावनाएं हैं। उन्होंने बताया कि हमारे उत्पाद निर्माण कार्यों के लिए उपयुक्त हैं।

वहीं ईरान से आयी पोर्फिमन मार्बल की निदेशक महनाज़ हाजी अली ने बताया कि वे विगत 18 वर्षों से लगातार इसका हिस्सा बन रही हैं। वह स्टोनमार्ट में अपनी भागीदारी के लिए हमेशा उत्सुक रहती हैं। उन्होंने बताया कि वर्तमान में भारत तेजी से आगे बढ़ रहा है और यहां निर्माण एवं वाणिज्यिक गतिविधियों में लगातार इजाफा देखने को मिल रहा है। उत्तर भारत का महत्वपूर्ण व्यापारिक केन्द्र होने के नाते जयपुर के बाजार में काफी संभावनाएं हैं।

महनाज ने बताया कि यहां ईरान के ओनिक्स मार्बल को बहुत पसंद किया जाता है। कम्पनी पोर्फिमन ने वर्श 2000 में मिनरल स्टोन के बाजार में प्रवेश किया और लगभग 30 अलग-अलग खदानों में बेहतरीन ईरानी मार्बल, ट्रैवर्टीन, ओनिक्स और लाइमस्टोन ब्लॉक्स निकाले जाते हैं। उन्हें आशा है कि जिस प्रकार की पूछपरख देखने में आ रही है उसे देखते हुए लगता है कि बिक्री निश्चित रूप से बढ़ेगी।

उज्बेकिस्तान के फॉरेन इकॉनोमिक रिलेशन्स डिपार्टमेंट के प्रतिनिधि बेकजोड़ फैज़ुल्लोव ने बताया कि लम्बे समय से उज्बेकिस्तान की माइनिंग मशीनरी का उपयोग राजस्थान में खनन कार्यों में हो रहा है।

छात्र के आत्महत्या करने के कुछ दिनों बाद प्रशासन ने छात्रावास को अपने कब्जे में लिया

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

कोटा। राष्ट्रीय पात्रता सह प्रवेश परीक्षा (नीट) की तैयारी कर रहे उत्तर प्रदेश निवासी एक छात्र के यहां छात्रावास के कमरे में फंदे से लटककर कथित तौर पर आत्महत्या किये जाने के कुछ दिनों बाद जिला प्रशासन ने छात्रावास को खाली कराकर इसे अपने कब्जे में ले लिया है। अधिकारियों ने शनिवार को बताया कि छत के पंखों में 'आत्महत्या रोधी उपकरणों' के अभाव के कारण प्रशासन ने यह कार्रवाई की।

उत्तर प्रदेश के मुरादाबाद निवासी 19 वर्षीय छात्र मोहम्मद जैद ने 23 जनवरी को अपने छात्रावास में कमरे के छत के पंखे के सहारे लगाए गए फंदे से लटककर कथित तौर पर आत्महत्या कर ली थी। जैद जवाहर नगर थाना क्षेत्र के राजीव गांधी नगर में कंचन रेजीडेंसी में रहता था।

कोटा के जिलाधिकारी डॉ. रवींद्र गोस्वामी ने शुक्रवार शाम यहां एक प्रेस विज्ञप्ति में बताया कि छात्रों की सुरक्षा के लिए जारी दिशानिर्देशों का उल्लंघन करने पर छात्रावास के खिलाफ कार्रवाई शुरू की गई थी। गोस्वामी ने कहा कि पिछले महीने छात्रावास के कमरे में एक छात्र द्वारा कथित तौर पर फांसी लगाकर आत्महत्या किये जाने के बाद अतिरिक्त जिलाधिकारी (एडीएम) द्वारा जांच शुरू की गई थी।

गोस्वामी ने कहा कि जांच रिपोर्ट के आधार पर एडीएम अदालत ने दंड प्रक्रिया संहिता (सीआरपीसी) की धारा 133 के तहत कार्रवाई शुरू करने और छात्रावास 'कंचन रेजीडेंसी' को अपने कब्जे में लेने का निर्देश दिया। अतिरिक्त जिलाधिकारी बृजमोहन बैरवा ने बताया कि छात्रावास के मालिक हिसुब सोनी और छात्रावास की देखभाल करने वाले रघुनंदन शर्मा को न्यायालय के आदेश में उल्लिखित शर्तों का पालन करने के सख्त आदेश दिए गए हैं। कंचन रेसीडेंसी में 32 कमरे हैं जिनमें से 10 में छात्र रहते हैं जबकि बाकी खाली हैं। उन्होंने कहा कि निजी छात्रावास के मालिक को पांच फरवरी तक 10 छात्रों को किसी अन्य छात्रावास में स्थानांतरित करने का निर्देश दिया गया। कोटा जिले के अधिकारियों ने छात्रावासों को छत के पंखों पर एक 'स्प्रिंग डिवाइस' लगाने का आदेश दिया था ताकि आत्महत्या करने की कोशिशों को नाकाम किया जा सके।

कोचिंग केंद्र के रूप में उभरे कोटा में इस साल अब तक तीन छात्रों के आत्महत्या की खबरें आ चुकी हैं। इससे पहले 29 जनवरी को संयुक्त प्रवेश परीक्षा (जेईई) की तैयारी कर रही 18 वर्षीय निहारिका सिंह ने कोटा में अपने घर पर कथित तौर पर फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली थी। 'पेइंग गेस्ट' के रूप में रह रहे बीटेक अंतिम वर्ष के एक छात्र ने अपने कमरे में दो फरवरी को फांसी लगाकर कथित तौर पर आत्महत्या कर ली थी।

राजस्थान को बनाएंगे सोलर उपकरणों के निर्माण का हब : नागर

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

जयपुर। ऊर्जा राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) हीरालाल नागर ने कहा कि राजस्थान में सौर ऊर्जा के क्षेत्र में असीम संभावनाएं हैं। राज्य सरकार का प्रयास है कि राजस्थान को सौर ऊर्जा उपकरणों के निर्माण के क्षेत्र में हब के रूप में विकसित किया जाए।

इस दिशा में उद्यमियों तथा निवेशकों को आवश्यक सुविधाएं प्रदान करने में सरकार कोई कमी नहीं रखेगी।

ऊर्जा मंत्री शनिवार को राजस्थान इंटरनेशनल सेंटर में राजस्थान सोलर एसोसिएशन की ओर से आयोजित भारत सोलर एक्सपो-2024 का अवलोकन करने के बाद उद्यमियों, निवेशकों तथा प्रतिभागियों से संवाद कर रहे थे। तीन दिवसीय इस एक्सपो में देश के अलग-अलग राज्यों से आए प्रोजेक्ट डवलपर्स, ईपीसी कंपनियां, मॉड्यूल एवं उपकरण निर्माता, एमएसएमई तथा इस सेक्टर से संबंधित विभिन्न सेवा प्रदाता भाग ले रहे हैं। ऊर्जा राज्य मंत्री ने इन सभी से प्रदेश में सौर ऊर्जा को बढ़ावा देने के लिए सुझाव लिए और सभी के सवालों के जवाब भी दिए।

नागर ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने रामलला की प्राण प्रतिष्ठा के शुभ अवसर पर प्रधानमंत्री सूर्योदय जैसी महत्वाकांक्षी योजना की घोषणा की है, जिसके तहत एक करोड़ घरों में सोलर पैनल लगाये जाएंगे। उन्होंने कहा कि आप सभी के सहयोग से भविष्य में राजस्थान सौर ऊर्जा का एक बड़ा हब बन सकेगा। उन्होंने कहा कि इस सोलर एक्सपो के माध्यम से विभिन्न सोलर उत्पादों के निर्माता एक ही छत के नीचे आ सके हैं।

राजस्थान सोलर एसोसिएशन के अध्यक्ष सुनील बंसल तथा अन्य पदाधिकारियों ने ऊर्जा मंत्री का स्वागत किया। एक्सपो में बड़ी संख्या में सोलर कंपनियों ने अपने उत्पादों एवं सेवाओं से संबधित स्टॉल प्रदर्शित की हैं, जिन्हें देखने के लिए बड़ी संख्या में लोग आ रहे हैं।

युवक ने अपने बेटे को तालाब में डुबोकर आत्महत्या की

जयपुर। राजस्थान के बीकानेर जिले में एक व्यक्ति द्वारा अपने 10 वर्षीय बेटे को तालाब में कथित रूप से डुबोने के बाद आत्महत्या किए जाने का मामला सामने आया है। बीकानेर की पुलिस अधीक्षक तेजस्वनी गौतम ने बताया कि जितेंद्र ओझा (48) का शव बरामद कर लिया गया है और उसके बेटे के शव की तलाश जारी है। उन्होंने कहा कि ओझा ने शुक्रवार शाम को कोलायत में एक तालाब में अपने बेटे को डुबो दिया।

एक अन्य पुलिस अधिकारी ने कहा कि ओझा अपने बेटे को तालाब ले गया और उसने उसे धक्का दे दिया लेकिन जब लड़के ने खुद को बचाने की कोशिश की तो युवक ने उसे जबरदस्ती गहरे पानी में धकेल दिया। अधिकारी ने बताया कि बाद में ओझा ने भी आत्महत्या कर ली। इस घटना का एक सीसीटीवी फुटेज भी सामने आया है। पुलिस के अनुसार, अभी यह स्पष्ट नहीं हुआ कि व्यक्ति ने यह कदम क्यों उठाया। मामले की जांच जारी है।

बैठक

जोधपुर में शनिवार को आयोजित संभाग स्तरीय बैठक में सम्मलित मुख्यमंत्री भजनलाल ने उपस्थित अधिकारियों के साथ समस्त लोक-कल्याणकारी व विकासवादी परियोजनाओं के जमीनी स्तर पर क्रियान्वयन सहित अन्य जनहित विषयों को लेकर सार्थक चर्चा की व आवश्यक दिशा निर्देश दिए।

ईआरसीपी पर त्रिपक्षीय समझौता राजस्थान और मध्य प्रदेश दोनों के लिए लाभकारी : शर्मा

जयपुर। राजस्थान के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने संशोधित पार्वती-कालीसिंध-चम्बल लिंक परियोजना (ईआरसीपी) को लेकर किए गए समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर उच्चतम न्यायालय के निर्णय का स्वागत किया है। उन्होंने कहा कि उच्चतम न्यायालय के निर्णय से बहुप्रतीक्षित ईआरसीपी का मार्ग प्रशस्त हुआ है। एक सरकारी बयान में मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की दूरगामी सोच से फलीभूत हुए इस एमओयू से दोनों ही प्रदेशों को लाभ होगा जिसका सीधा फायदा राजस्थान और मध्य प्रदेश के किसानों एवं आमजन को होगा। मुख्यमंत्री ने कहा कि इस परियोजना के मूर्त रूप लेने के पश्चात पूर्वी राजस्थान के 13 जिलों में पेयजल उपलब्ध हो सकेगा और सिंचित क्षेत्र में वृद्धि होने से फसल उत्पादन, किसानों की आय और खुशहाली बढ़ेगी। उच्चतम न्यायालय ने मध्यप्रदेश सरकार द्वारा पूर्व में ईआरसीपी के संबंध में दायर की गई याचिका इस आधार पर निस्तारित कर दी कि संशोधित पार्वती-कालीसिंध-चम्बल लिंक परियोजना के त्रिपक्षीय एमओयू पर हस्ताक्षर हो चुके हैं।

नई चुनौतियों से निपटने के लिए न्याय प्रणाली को और अधिक लचीला बनाने की जरूरत: मोदी

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

नई दिल्ली/भाषा। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने शनिवार को जांच और न्याय प्रदान करने के लिए देशों के बीच सहयोग बढ़ाने की वकालत करते हुए कहा कि अपराधी विभिन्न क्षेत्रों में वित्त पोषण और संचालन के लिए नवीनतम प्रौद्योगिकियों का इस्तेमाल कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि एक-दूसरे के अधिकार क्षेत्र का सम्मान करते हुए सहयोग किया जा सकता है, क्योंकि जब हम एक साथ काम करते हैं, तो अधिकार क्षेत्र बिना देरी किए न्याय देने का एक उपकरण बन जाता है। उन्होंने कहा कि 'क्रिप्टोकरेंसी' और साइबर खतरों के बढ़ने से नई चुनौतियां पैदा हुई हैं और न्याय प्रणाली को अधिक लचीला और अनुकूल बनाने की आवश्यकता है।

यहां राष्ट्रमंडल विधि शिक्षा संघ (सीएलईए) - राष्ट्रमंडल अटॉर्नी और सॉलिसिटर जनरल सम्मेलन (सीएएसजीसी) में उन्होंने कहा कि देश पहले से ही हवाई यातायात नियंत्रण और समुद्री यातायात के क्षेत्र में एक-दूसरे के साथ काम करते हैं। उन्होंने जांच और न्याय प्रदान करने में भी सहयोग की वकालत की। उन्होंने कहा, जब हम एक साथ काम करते हैं, तो अधिकार क्षेत्र बिना देरी किए न्याय देने का एक उपकरण बन जाता है।

मोदी ने कहा कि अपराध की प्रकृति और दायरे में आमूलचूल परिवर्तन देखा गया है। उन्होंने कहा, कभी-कभी एक देश में न्याय सुनिश्चित करने के लिए दूसरे देशों के साथ मिलकर काम करने की आवश्यकता होती है। मोदी ने कहा कि 21वीं सदी की चुनौतियों का सामना 20वीं सदी के दृष्टिकोण से नहीं किया जा सकता।

प्रधानमंत्री ने कहा कि एक क्षेत्र में आर्थिक अपराधों का उपयोग अन्य क्षेत्रों में गतिविधियों को वित्तपोषित करने के लिए किया जा रहा है। उन्होंने कहा, क्रिप्टोकरेंसी और साइबर खतरों के बढ़ने से नई चुनौतियां खड़ी हो रही हैं...पुनर्विचार, पुनर्कल्पना और सुधार की जरूरत है।

कार्यक्रम में भारत के प्रधान न्यायाधीश डी. वाई. चंद्रचूड़, उच्चतम न्यायालय और उच्च न्यायालयों के वरिष्ठ न्यायाधीश और कानूनी अधिकारी मौजूद थे।

मोदी ने कहा कि न्याय प्रदान करने वाली कानूनी प्रणालियों को आधुनिक बनाने की जरूरत है। उन्होंने कहा, इसमें हमारे सिस्टम को अधिक लचीला और अनुकूल बनाना शामिल है।

सम्मेलन में अफ्रीकी प्रतिनिधियों की उपस्थिति को देखते हुए प्रधानमंत्री ने अफ्रीकी संघ के साथ भारत के विशेष संबंधों पर प्रकाश डाला।

नीतीश ने गृह विभाग अपने पास रखा, वित्त और स्वास्थ्य विभाग भाजपा के हिस्से में

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

पटना/भाषा। बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने शनिवार को नए मंत्रिमंडल में विभागों का आवंटन करते हुए गृह विभाग अपने पास रखा जबकि वित्त विभाग भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) को दिया है।

एक अधिसूचना के अनुसार, गृह के अलावा कुमार ने कैबिनेट सचिवालय, चुनाव, सतर्कता, सामान्य प्रशासन जैसे प्रमुख विभाग भी अपने पास रखे हैं। साथ ही ''किसी और को आवंटित नहीं किए गए अन्य सभी विभाग'' मुख्यमंत्री के पास रहेंगे। प्रदेश भाजपा अध्यक्ष एवं उपमुख्यमंत्री सम्राट चौधरी को वित्त विभाग का प्रभार सौंपा गया है। भाजपा ने जब भी जनता दल (यूनाइटेड) के अध्यक्ष नीतीश कुमार के साथ सत्ता साझा की है तो उसे हमेशा वित्त विभाग मिला है। इससे पहले, जब कुमार कांग्रेस, राजद जैसे घटक दलों वाले 'महागठबंधन' के साथ सरकार चला रहे थे, तब स्वास्थ्य, वित्त विभाग जद (यू) के पास था। वित्त के अलावा, चौधरी को स्वास्थ्य विभाग, वाणिज्यिक कर, शहरी विकास एवं आवास, खेल, पंचायती राज, पशुपालन एवं मत्स्य पालन और कानून विभाग दिया गया है।

अधिसूचना के मुताबिक, भाजपा नेता एवं उपमुख्यमंत्री विजय कुमार सिन्हा को कृषि तथा सड़क निर्माण का अहम प्रभार सौंपा गया है। इसके अलावा, उन्हें राजस्व एवं भूमि सुधार, खनन एवं भूविज्ञान, गन्ना, श्रम संसाधन, कला, संस्कृति एवं युवा मामले, लघु जल संसाधन एवं लोक स्वास्थ्य अभियंत्रण विभाग का भी प्रभार दिया गया है।

ममता ने बंगाल में 21 लाख मनरेगा श्रमिकों के बैंक खातों में धनराशि अंतरण की घोषणा की

कोलकाता/भाषा। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने शनिवार को घोषणा की कि उनकी सरकार 21 फरवरी तक राज्य के 21 लाख मनरेगा श्रमिकों के बैंक खातों में धनराशि अंतरित कर देगी, जिनके वेतन का भुगतान नहीं किया गया है। बनर्जी ने शुक्रवार को शहर में बी.आर. आंबेडकर की प्रतिमा के सामने 48 घंटे का धरना शुरू किया और केंद्र से विभिन्न सामाजिक कल्याण योजनाओं के लिए बकाया राशि जारी करने की मांग की। बनर्जी ने धरनास्थल से घोषणा की, हमें भाजपा से भीख नहीं मांगनी है और न ही भाजपा की भीख चाहिए। 21 फरवरी तक हम उन 21 लाख श्रमिकों के बैंक खातों में पैसे अंतरित कर देंगे, जिन्हें पिछले तीन साल से काम करने के बाद भी मनरेगा का पैसा नहीं मिला है। तृणमूल कांग्रेस की प्रमुख बनर्जी ने यह भी कहा कि उनकी पार्टी लोकसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी के खिलाफ पूरी ताकत से उतरेगी।

प्रौद्योगिकी न्याय के लिए शक्तिशाली माध्यम के रूप में उभरी है: प्रधान न्यायाधीश

नई दिल्ली/भाषा। भारत के प्रधान न्यायाधीश (सीजेआई) डी. वाई. चंद्रचूड़ ने शनिवार को कहा कि न्याय के लिए प्रौद्योगिकी एक शक्तिशाली माध्यम के रूप में उभरी है और यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि प्रौद्योगिकीय तंत्र को समानता व समावेशिता को ध्यान में रखकर तैयार किया जाए। सीजेआई ने कहा कि न्याय के प्रति साझा प्रतिबद्धता कायम करने के महत्व को पहचानने की आवश्यकता है।

'कॉमनवेल्थ लीगल एजुकेशन एसोसिएशन (सीएलईए) - कॉमनवेल्थ अटॉर्नी और सॉलिसिटर जनरल सम्मेलन' में न्यायमूर्ति चंद्रचूड़ ने कहा कि यह जरूरी है कि कानूनी अधिकारी राजनीति से प्रभावित न हों और कानूनी कार्यवाही की अखंडता सुनिश्चित करते हुए अदालतों में गरिमापूर्ण व्यवहार करें। उन्होंने कहा, हम परंपरा और नवाचार के चौराहे पर खड़े हैं, प्रौद्योगिकी न्याय के लिए एक शक्तिशाली माध्यम के रूप में उभरी है। हालांकि इससे न्याय की गति और पहुंच बढ़ने की उम्मीद की जाती है, लेकिन हमें सावधानी से आगे बढ़ना चाहिए। सीजेआई ने कहा, भारतीय समाज के भीतर गहरी जड़ें जमा चुके संरचनात्मक और वित्तीय पदानुक्रम मंथन की मांग करता है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि प्रौद्योगिकी अनजाने में मौजूदा समस्याओं को न बढ़ाए।

भ्रष्टाचार के 'बेताज बादशाह' केजरीवाल हमेशा जांच से भागते रहते हैं : भाजपा

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

नई दिल्ली/भाषा। भाजपा ने शनिवार को दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की आलोचना करते हुए उन्हें भ्रष्टाचार का बेताज बादशाह जो हमेशा (जांच से) भागता रहता है, करार दिया। मुख्य विपक्षी दल का यह बयान ऐसे समय आया है जब दिल्ली पुलिस की अपराध शाखा का एक दल केजरीवाल को उनके आधिकारिक आवास पर उन्हें नोटिस देने पहुंचा था।

यह नोटिस उनके इस दावे की जांच में शामिल होने के लिए दिया गया था कि भारतीय जनता पार्टी सत्तारूढ़ आप विधायकों को तोड़ने की कोशिश कर रही है।

एक सहायक पुलिस आयुक्त (एसीपी) स्तर के अधिकारी के नेतृत्व में दिल्ली पुलिस की टीम मुख्यमंत्री के आवास पर पहुंची और जोर देकर कहा कि वे केवल केजरीवाल को नोटिस सौंपेंगे क्योंकि यह उनके नाम पर था। वहीं मुख्यमंत्री के आवास पर अधिकारियों ने कहा कि वे नोटिस लेने और क्राइम ब्रांच को पावती देने को तैयार थे।

भाजपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता शहजाद पूनावाला ने तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा, यह एक अजीब स्थिति है। दिल्ली के लोग आज केजरीवाल को भगोड़ा कहने के लिए मजबूर हैं। उन्होंने कहा कि ऐसा इसलिए है क्योंकि जब प्रवर्तन निदेशालय ने कथित घोटाले के सिलसिले में केजरीवाल को पांच समन जारी किए, तो वह भाग गए। पूनावाला ने आरोप लगाया कि वह जांच एजेंसी के सामने पेश नहीं हुए और जांच में सहयोग नहीं किया।

ओडिशा : प्रधानमंत्री मोदी ने 68 हजार करोड़ रुपए की परियोजनाओं का उद्घाटन, शिलान्यास किया

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

संबलपुर (ओडिशा)/भाषा। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने शनिवार को 68 हजार करोड़ रुपए की परियोजनाओं का उद्घाटन व शिलान्यास किया।

संबलपुर स्थित भारतीय प्रबंध संस्थान (आईआईएम) में 400 करोड़ रुपए के स्थायी परिसर के उद्घाघाटन के अलावा प्रधानमंत्री मोदी ने ऊर्जा, सड़क और रेलवे जैसे अलग-अलग क्षेत्रों की कई परियोजनाओं का उद्घाटन किया।

मोदी ने वर्ष 2021 में आईआईएम परिसर का शिलान्यास किया था।

राज्य में 18 परियोजनाओं का उद्घाटन करने के बाद, प्रधानमंत्री ने कहा, ये परियोजनाएं ओडिशा के युवाओं को फायदा पहुंचाएगी और रोजगार के अवसर पैदा करेंगी। केंद्र हर क्षेत्र में ओडिशा का समर्थन करती है।

प्रधानमंत्री ने पुरी-सोनेपुर-पुरी साप्ताहिक एक्सप्रेस को हरी झंडी भी दिखाई, जो क्षेत्र में ट्रेनों की आवाजाही को बेहतर बनाएगी। इसके अलावा, मोदी ने झारसुगुडा प्रधान डाकघर विरासत भवन को भी राष्ट्र को समर्पित किया।

मोदी ने जगदीशपुर-हल्दिया और बोकारो-धामरा पाइपलाइन परियोजना (जेएचबीडीपीएल) के 412 किलोमीटर लंबे धामरा-अंगुल पाइपलाइन खंड का भी उद्घाटन किया।

'प्रधानमंत्री ऊर्जा गंगा' के तहत लगभग 2,450 करोड़ रुपए की लागत से निर्मित यह परियोजना ओडिशा को राष्ट्रीय गैस ग्रिड से जोड़ेगी।

कार्यक्रम में, ओडिशा के मुख्यमंत्री नवीन पटनायक, राज्यपाल रघुबर दास और केंद्रीय मंत्री धर्मेंद्र प्रधान, अश्विनी वैष्णव तथा बिशेश्वर टुडू भी उपस्थित थे।

भाजपा ने झारखंड में सरकार 'चोरी' करने की कोशिश की : राहुल गांधी

गोड्डा (झारखंड)/भाषा। कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने शनिवार को भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) पर झारखंड में सरकार की 'चोरी' की कोशिश करने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि कांग्रेस ने जनादेश की रक्षा के लिए हस्तक्षेप किया। गोड्डा जिले में कांग्रेस की 'भारत जोड़ो न्याय यात्रा' के दौरान एक जनसभा को संबोधित करते हुए राहुल गांधी ने झारखंड मुक्ति मोर्चा (झामुमो)नीत गठबंधन सरकार को बचाने में कांग्रेस की भूमिका पर प्रकाश डाला। उन्होंने एक बार फिर भाजपा की विचारधारा का विरोध करने की अपनी प्रतिबद्धता दोहराई। वह बाद में देवघर पहुंचे और द्वादश ज्योर्तिलिंग में से एक बैद्यनाथ धाम में पूजा-अर्चना की और इसके अलावा एक अन्य जनसभा को संबोधित किया। मणिपुर से 14 जनवरी को शुरू हुई यात्रा शुक्रवार दोपहर को पश्चिम बंगाल से पाकुड़ जिले होते हुए झारखंड राज्य में प्रवेश की। कांग्रेस प्रवक्ता राकेश सिन्हा ने 'पीटीआई-भाषा' को बताया कि पाकुड़ के लिट्टीपाड़ा में रात्रि विश्राम के बाद यात्रा शनिवार सुबह गोड्डा जिले के सरकंडा चौक से फिर शुरू हुई। सिन्हा ने बताया कि यात्रा धनबाद के लिए रवाना होगी और धनबाद के टुंडी ब्लॉक के हलकटा में रात्रि विश्राम के लिए पड़ाव डालने की योजना है। झारखंड में यात्रा दो चरणों में होगी और इस दौरान आठ दिन के दौरान 13 जिलों में 804 किलोमीटर की दूरी तय की जाएगी। 'भारत जोड़ो न्याय यात्रा' 67 दिनों में 6,713 किलोमीटर की दूरी तय करेगी और 15 राज्यों के 110 जिलों से होते हुए 20 मार्च को मुंबई में समाप्त होगी।

भाजपा ने वोटबैंक को बिखरने से बचाने के लिए आडवाणी को भारत रत्न दिया : अखिलेश यादव

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

बलरामपुर (उप्र)/भाषा। समाजवादी पार्टी (सपा) के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव ने शनिवार को पूर्व उप प्रधानमंत्री लालकृष्ण आडवाणी को भारत रत्न दिए जाने पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा कि भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने अपने वोटबैंक को बिखरने से बचाने के लिए ये सम्मान दिया। बलरामपुर जिले में दिवंगत विधायक व पूर्व मंत्री एसपी यादव को श्रद्धांजलि देने पहुंचे सपा प्रमुख यादव ने भाजपा के संस्थापक सदस्य आडवाणी को भारत रत्न दिए जाने के के सवाल पर कहा, भाजपा ने वोटबैंक को बिखरने से बचाने के लिए ये सम्मान दिया।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने पूर्व उप प्रधानमंत्री लालकृष्ण आडवाणी को देश के सर्वोच्च नागरिक सम्मान भारत रत्न से नवाजा जाने की घोषणा की और अपने लिए इसे ''एक अत्यंत भावुक क्षण'' बताया। सपा प्रमुख यादव ने संवाददाताओं से कहा, यह भारत रत्न अपने वोट को बांधने के लिए दिया जा रहा है। यह सम्मान में नहीं दिया जा रहा है। यह सम्मान (भारत रत्न मिलना) तो है खैर, लेकिन अपने वोट को बांधने के लिए दिया जा रहा है। विपक्षी गठबंधन 'इंडिया' में सीटों के बंटवारे को लेकर उन्होंने कहा कि 'सीटों के बंटवारे को लेकर जिस स्तर पर बात होनी चाहिए, हो चुकी है तथा उनको जानकारी भी दी जा चुकी है। यादव ने कहा, सीटों के बंटवारे को लेकर लगभग सहमति बन चुकी है। जीत और सीट के हिसाब से सीटों का बंटवारा होगा। उन्होंने कहा, कांग्रेस आलाकमान से उनकी बात हो चुकी है, सीटों के बंटवारे को लेकर कोई दुविधा नहीं है।

भड़काऊ भाषण के आरोप में इस्लामिक उपदेशक के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज

जूनागढ़/भाषा। गुजरात के जूनागढ़ में भड़काऊ भाषण के सोशल मीडिया पर वायरल होने की घटना के बाद पुलिस ने इस सिलसिले में शनिवार को दो लोगों को गिरफ्तार कर लिया। पुलिस के मुताबिक यह भड़काऊ भाषण कथित तौर पर एक इस्लामिक उपदेशक ने दिया था। पुलिस अधीक्षक हर्षद मेहता ने कहा कि मुंबई के रहने वाले इस्लामिक उपदेशक मुफ्ती सलमान अजहरी का पता लगाने की कोशिश की जा रही है। उन्होंने कहा कि यह भाषण 31 जनवरी की रात को यहां 'बी' डिवीजन पुलिस थाने के पास एक खुले मैदान में आयोजित एक कार्यक्रम में दिया गया था।

रामकुमार और श्रीराम बालाजी जीते, भारत ने पाकिस्तान पर 2-0 से बढ़त बनायी

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

इस्लामाबाद/भाषा। भारत ने रामकुमार रामनाथन और एन श्रीराम बालाजी के दबाव भरे मैचों में जीत की बदौलत शनिवार को यहां डेविस कप विश्व ग्रुप एक प्ले ऑफ मुकाबले में पाकिस्तान पर 2-0 से बढ़त बना ली।

ऐसाम उल हक ने शुरुआती एकल में कड़ी चुनौती पेश की लेकिन तीसरे सेट में मांसपेशियों में खिंचाव के कारण पिछड़ गए।

रामकुमार ने इस्लामाबाद खेल परिसर में जोश से भरे ऐसाम से पहला सेट गंवा दिया था लेकिन वापसी करते हुए 6-7(3) 7-6(4), 6-0 से जीत हासिल कर भारत को 1-0 से आगे कर दिया। इस मैच में 43 वर्षीय ऐसाम ने 10 डबल फॉल्ट की। ऐसाम कड़कड़ाती ठंड में अपने 'डबल फॉल्ट' पर लगाम नहीं लगा सके जबकि रामकुमार ने जैसे जैसे मैच आगे बढ़ा अपने रिटर्न बेहतर करना शरू किया। बारिश से प्रभावित दूसरे एकल में युगल विशेषज्ञ बालाजी को अकील खान ने चुनौती दी लेकिन वह पाकिस्तान के अनुभवी खिलाड़ी को 7-5, 6-3 से पराजित करने में सफल रहे।

बालाजी ने मैच पर शिकंजा कसा हुआ था। उन्होंने दोनों सेट में एक एक बार अकील की सर्विस तोड़ी। उनकी मजबूत सर्विस, ड्रॉप शॉट्स का बखूबी इस्तेमाल और मूवमेंट अंत में उन्हें आसान जीत दिलाने में सफल रहे।

भारत अब विश्व ग्रुप एक में जगह बनाने से एक जीत दूर है।

युकी भांबरी और साकेत मायनेनी अब रविवार को मुकाबला जीतने की कोशिश करेंगे। तीसरे मैच में उनका सामना मुजम्मिल मुर्तजा और बरकत उल्लाह की जोड़ी से होगा।

पुलिस से सहानुभूति है, अपराध रोकने के बजाय उनसे नौटंकी करवाई जा रही है : अरविंद केजरीवाल

नई दिल्ली/भाषा। दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने भाजपा के खिलाफ विधायकों की खरीद-फरोख्त के आरोप में नोटिस देने पर शनिवार को प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा कि उन्हें पुलिस से सहानुभूति है, जिससे अपराध रोकने के बजाय ''राजनीतिक आकाओं'' द्वारा नौटंकी करवाई जा रही है। सिविल लाइंस में केजरीवाल के आधिकारिक आवास पर शनिवार को उस समय नाटकीय घटनाक्रम हुआ, जब अपराध शाखा का एक दल भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) द्वारा आम आदमी पार्टी (आप) के कुछ विधायकों की खरीद-फरोख्त करने का प्रयास किए जाने संबंधी आरोपों की जांच के सिलसिले में नोटिस देने के लिए वहां पहुंचा। अपने आवास पर कुछ पुलिसकर्मियों के पहुंचने का एक वीडियो साझा करते हुए, केजरीवाल ने 'एक्स' पर पोस्ट किया कि उन्हें नोटिस देने के लिए आए पुलिस अधिकारियों के प्रति सहानुभूति है। केजरीवाल ने कहा, दिल्ली में अपराध रोकना पुलिस का कर्तव्य है, लेकिन उनसे नौटंकी करवाई जा रही है। इसीलिए दिल्ली में अपराध बढ़ रहा है।

यशस्वी जायसवाल टेस्ट में दोहरा शतक जड़ने वाले तीसरे सबसे युवा भारतीय बने

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

विशाखापत्तनम/भाषा। भारत के युवा सलामी बल्लेबाज यशस्वी जायसवाल शनिवार को यहां इंग्लैंड के खिलाफ दूसरे टेस्ट के दूसरे दिन दोहरा शतक जड़ने वाले तीसरे सबसे युवा भारतीय बने।

अपना छठा टेस्ट खेल रहे 22 साल के जायसवाल ने 290 गेंद की पारी में 19 चौके और सात छक्के की मदद से 209 रन बनाए। वह दिग्गज जेम्स एंडरसन की गेंद पर जॉनी बेयरस्टो को कैच देकर पवेलियन लौटे। उनकी शानदार बल्लेबाजी से भारत ने पहली पारी में 396 रन बनाए।

सबसे कम उम्र में दोहरा शतक जड़ने वाले भारतीय का रिकॉर्ड विनोद कांबली के नाम है। पूर्व वामहस्त बल्लेबाज कांबली ने 1993 में 21 साल और 335 दिन की उम्र में इंग्लैंड के खिलाफ दोहरा शतक जड़ा था। कांबली ने इसके 20 दिन के बाद जिम्बाब्वे के खिलाफ अपना लगातार दूसरा दोहरा शतक बनाया था। कांबली से पहले महान बल्लेबाज सुनील गावस्कर लंबे समय तक दोहरा शतक जड़ने वाले भारत के सबसे युवा बल्लेबाज थे। उन्होंने 1971 में वेस्टइंडीज के खिलाफ यह कारनामा किया था। वह गौतम गंभीर के बाद खेल के पारंपरिक प्रारूप में दोहरा शतक लगाने वाले पहले भारतीय बाएं हाथ के बल्लेबाज हैं। गंभीर ने 2008 में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ दोहरा शतक जड़ा था। जायसवाल की पारी की तारीफ भारत के दिग्गज बल्लेबाज विराट कोहली ने भी की। इस शृंखला की शुरुआती दो टेस्ट से निजी कारणों ने टीम से बाहर रहने वाले कोहली ने कहा, यशस्वी जायसवाल .... कम उम्र में शानदारी पारी खेली। जायसवाल ने पिछले साल वेस्टइंडीज के खिलाफ अपने पदार्पण टेस्ट मैच में 171 रन बनाए थे। उन्होंने हैदराबाद में मौजूदा शृंखला के शुरुआती मैच में 80 रन बनाए थे, जिसे भारत 28 रन से हार गया था। जायसवाल बीते दिन 179 रन नाबाद थे। उन्होंने दूसरे दिन के पहले सत्र में पदार्पण कर रहे स्पिनर शोएब बशीर के खिलाफ लगातार गेंदों पर छक्का और चौका लगाकर अपना दोहरा शतक पूरा किया।

सुविचार

हर काम को तीन अवस्थाओं से गुज़रना होता है उपहास, विरोध और स्वीकृति।

ट्वीट

आज भाजपा के हर एक कार्यकर्ता के लिए गर्व और गौरव का दिन है। आज देश ने हम सब के आदरणीय नेता लालकृष्ण आडवाणी जी को भारत रत्न देने की घोषणा की है। ये सम्मान, हम सब कार्यकर्ताओं का सम्मान है, ये सम्मान उस विचारधारा का भी सम्मान है जो राष्ट्र प्रथम को लेकर चलती है।

-राज्यवर्धनसिंह राठौड़

अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान जोधपुर के चतुर्थ दीक्षांत समारोह में मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा तथा केंद्रीय मंत्री डॉ. मनसुख मांडविया के साथ प्रतिभागिता की। साथ ही जोधपुर सहित अन्य क्षेत्रों में स्वास्थ्य परियोजनाओं व सुविधाओं के वर्चुअली शिलान्यास व लोकार्पण में शामिल हुआ।

-गजेन्द्र सिंह शेखावत

कहानी

हिस्से का उजाला

ट्रेन अपनी मंजिल की ओर तेज गति से जा रही थी। पटरियों के दोनों तरफ दूर – दूर तक जमीन पर फैली घास के साथ पाम और नारियल के पेड़ों के झुंड थे। सुबह का सूरज धीरे – धीरे अपनी जवानी की ओर बढ़ रहा था। पेड़ – पौधों की पत्तियों पर ओस की बूंदें अपना डेरा जमाए बैठी थीं। रंग – बिरंगे फूलों और हरियाली से मन को रिझाने वाली ताजा खुशबू आ रही थी। सुबह के समय वातावरण में हल्की नमी के कारण खुशगवार हवा चल रही थी। पटरियों के किनारे पर कहीं – कहीं मौजूद जंगली पौधों के फूल भी झांकते हुए नजर आ रहे थे।

अमर और उसका पुत्र पवन ट्रेन के डिब्बे के केबिन में अपनी – अपनी बर्थ पर लेटे हुए थे। थोड़ी – थोड़ी देर में पवन अपनी ओढ़ी हुई चादर से मुंह निकालकर सामने की बर्थ लेटे हुए अमर की ओर देखता और फिर से मुंह ढककर सो जाने का नाटक करने लगता। पवन के चेहरे पर उसके भविष्य को लेकर अनजान आशंका के भाव नजर आ रहे थे। अचानक अमर उठा और खिड़की के पास बैठ गया । अमर पथराई आंखों से खिड़की के बाहर खुले आसमान की ओर देख रहा था। पवन के भविष्य को लेकर एक अज्ञात भय उसका पीछा कर रहा था।अपने मन में पैदा हो रही कई तरह की उलझनों से वह मुक्त नहीं हो पा रहा था। पवन की पढ़ाई को लेकर किए गए प्रयास से वह मानसिक द्वंद में ज्यादा उलझता जा रहा था। समय के साथ स्वार्थ को खून के रिश्ते में जगह बनाता देख वह हैरान और परेशान था। अपने रिश्तों के निजी सवालों में उलझता हुआ वह इनके आधे – अधूरे जवाब ही ढूंढ पा रहा था। सवाल और जवाब के बीच के फासले की कश्मकश में वह पिछले दिनों उनके साथ घटित घटना की स्मृतियों में खो गया।

पवन के दसवीं कक्षा में अच्छे नम्बर आए थे। उसके पास आगे पढ़ने के लिए अपने गांव में कोई सुविधा नहीं थी। गांव से लगभग चालीस किलोमीटर दूर एक कस्बे में बारहवीं कक्षा तक कला विषय में पढ़ाई की व्यवस्था थी। पवन अपना भविष्य विज्ञान के विषय में देख रहा था।कॉलेज की पढ़ाई के लिए किसी शहर जाना पड़ता था। अमर की हार्दिक इच्छा थी कि पवन अपनी आगे की पढ़ाई जारी रख सके । ताकि अच्छा पढ़ लिखकर अच्छी नौकरी करे। जिससे आने वाले समय में उनका परिवार बेहतर ज़िंदगी जी सके। उसकी उम्मीदें पवन की आगे की पढ़ाई पर टिकी थीं। अमर के पास रुपयों की कमी इसमें बड़ी बाधा बनकर खड़ी थी। वह खुद आर्थिक तंगी के कारण ज्यादा पढ़ नहीं पाया था। लेकिन पवन के भविष्य के लिए अहम फैसला लेना था। उसके पास दो ही विकल्प थे। पहला यह कि पवन शहर जाकर पढ़ाई करे और दूसरा यह कि पवन पढ़ाई छोड़ दे। वह खुद विचारों के जबरदस्त तूफान के आगोश में था। उसे अपना पिता होने का फर्ज भी निभाना था।

उसके आर्थिक हालात ऐसे नहीं थे कि वह पवन की शहर में रहने और पढ़ने की व्यवस्था कर सके। उसे एक चिंता यह भी थी कि एक साधारण से गांव का पवन शहर की भीड़ के साथ कैसे चल पाएगा। शहर के रास्तों में उसे कांटे और नागफनी भी मिल सकते हैं उसके अनुसार गांव में तो इंसान अपनी जीवन यात्रा साफ – सुथरी पगडंडी या सड़क पर चलकर पूरी कर लेता है। गांव में स्थानीय बोली बोलने वाले पवन को शहर की बोलचाल की भाषा हिन्दी तो थोड़ी बहुत आती थी लेकिन अंग्रेजी नहीं के बराबर आती थी। उसकी पवन के बारे में इसलिए भी चिंता बढ़ती जा रही थी। वह नहीं चाहता था कि परिस्थितिवश जैसा कभी उसके साथ हुआ था वैसा पवन के साथ हो।

गांव में अकाल के कारण खेती के काम मंदे पड़ते जा रहे थे। बहुत से किसान अपने खेतों को गांवों में पसरती कम्पनियों को बेचने के लिए पलक – पांवड़े बिछाकर उनका इंतजार कर रहे थे। गांव में ज्यादातर लोग पास के शहरों में जाकर दिहाड़ी पर मजदूरी करने और कुछ लोग गांव में ही किसी कम्पनी में काम करने लगे थे। लोग अपने परिवार सहित दो जून की रोटी के लिए कड़ी मेहनत करते थे। गांव में दसवीं कक्षा के आगे की पढ़ाई नहीं होने के कारण बहुत से जवान लड़के किसी पेड़ की छांव में चबूतरे पर दिन भर बैठे गपशप करते रहते थे।चौपाल पर भी बेरोजगार जवान लड़कों का जमघट लगा रहता था।

वह समय और शिक्षा के महत्व को समझते हुए गांव की इस भीड़ से पवन को दूर रखना चाहता था। गांव में वह अपनी परिस्थितियों से जूझते हुए अपने लिए रच दी गई दुनिया में जी रहा था। अल्पशिक्षित होने के कारण उसके पास विकल्प भी नहीं था। इसलिए वह अपना गांव और परिवार नहीं छोड़ पाया। वह अपने परिवार और समाज की जिम्मेदारियों को निभाते हुए कब अधेड़ हो गया पता ही नहीं चला। गांव में वह अपने घर के बाहर बनी गुमटीनुमा दुकान में किराने का सामान बेचता था। पवन को लेकर वह भावनात्मक तनाव के दौर से भी गुजर रहा था। वह नहीं चाहता था कि उसकी आर्थिक स्थिति के कारण पवन का भविष्य खराब हो । एक अपराध बोध सा उसे परेशान करने लगा था।

एक दिन उसकी पत्नी ने उसे शहर में रह रहे उसके बड़े भाई और पवन के ताऊ जी समीर से फोन पर पवन की आगे की पढ़ाई के बारे में बात करने के लिए कहा। इस बात के लिए उसका मन नहीं माना। लेकिन पत्नी के बार – बार कहने पर वह इसके लिए राजी हो गया। उसने जब समीर को फोन किया तो समीर ने कोई दिलचस्पी नहीं दिखाई और उसे दो दिन बाद फोन करने के लिए कहा। उसने इसे समीर की कार्य में व्यस्तता ही समझा। उसका बड़ा भाई समीर बचपन से ही होशियार , मेहनती और चालाक था। समीर ने पढ़ाई में हमेशा अव्वल रहने पर मिली स्कॉलरशिप से शहर में जाकर उच्च शिक्षा ग्रहण करी थी। शहर में नौकरी लगने और विवाह करने के बाद समीर वहीं बस गया था। माता – पिता के जीवनकाल में भी वह गांव कम ही आता था। उनकी मृत्यु के बाद उसका आना और भी कम हो गया था।

समीर ने सरकारी महकमे से उच्च पद से रिटायर होने के बाद शहर में कम्प्यूटर का बिजनेस शुरु किया था। वह कई नामी कम्पनियों के डिस्ट्रीब्यूटर था। उसके परिवार में पत्नी राधा , पुत्र राजन ,पुत्रवधू नेहा और पोता – पोती थे। राजन और नेहा शहर के नामी हॉस्पिटल में डॉक्टर थे। पिछले वर्ष ही अमर अपने परिवार सहित समीर के पोते की दूसरी वर्ष गांठ के अवसर पर शहर गया था। समीर ने अपने आलीशान बंगले पर शानदार पार्टी रखी थी। लग्जरी गाड़ियों में आई शहर की नामचीन हस्तियां वहां मौजूद थीं। पार्टी में संगीत और नृत्य का शोर देर रात तक चला था। रुपया पानी की तरह बहाया गया था। समीर के बहुत बड़े घर में रहने वाले सदस्यों का रहन – सहन , व्यवहार और खान – पान देखकर अमर और उसके परिवार वाले दंग रह गए थे। घर के सभी सदस्य बिना एक – दूसरे की दखलंदाजी के बड़े अदब से रहते थे।

उन्हे लगने लगा था कि वो किसी दूसरी दुनिया में आ गए थे। दोनों सगे भाइयों की दुनिया में आपस में कोई समानता नहीं थी। अमर ने इस बात को गम्भीरता से महसूस किया था। उसके परिवार की बोली और पोशाक उस पार्टी में उनकी गरीबी और पिछड़ेपन की चुगली कर रहे थे। उनका आत्मविश्वास डगमगा गया था। समीर के यहां वो लोग चार दिन रुके थे। अमर गांव आने के बाद अपने इकलौते बेटे पवन के लिए समीर जैसी ज़िंदगी के सपने पालने लगा था।

दो दिन बाद अमर ने समीर को फोन किया। समीर ने कहा यह तुम्हारा ही घर है। यहां के दरवाजे तुम्हारे लिए हमेशा खुले हैं। पवन निसंकोच यहां आकर हमारे साथ रहकर अपनी आगे की पढ़ाई करे। तुम्हे किसी भी तरह की चिंता करने की जरुरत नहीं है। तुम पवन को यहां भेज दो। उसने अपनी पत्नी को जब यह बात बताई तो उसके चेहरे पर खुशी छा गई। वह पूरी रात सो नहीं पाया। उसे पवन के भविष्य को लेकर देखा अपना सपना पूरा होता दिख रहा था।

एक सप्ताह बाद वह पवन के साथ रात वाली ट्रेन से शहर के लिए रवाना हो गया।वह चाहता था कि पवन जल्दी से जल्दी शहर की संस्कृति जान ले। सुबह स्टेशन पर उन्हे राजन लेने आया था। उनके समीर के घर पर पहुंचने के बाद हुई आवभगत से उन्हे लगा ही नहीं कि उनमें आपस में कोई फर्क है। बंगले के लॉन में रखे कुर्सी पर बैठकर अपने भाई – भाभी के साथ चाय पीते हुए वह उनके व्यवहार से बहुत खुश था। कुछ ही देर में घर के सभी सदस्य अपने – अपने काम में व्यस्त हो गए थे। उसे और पवन को रहने के लिए एक कमरा दे दिया था।

समीर के बंगलानुमा घर की हर चीज में विशेष प्रकार की चमक थी। घर के दरवाजों और खिड़कियों पर लगे साफ पर्दे , बेड पर बिछी साफ चादरें , चारों ओर सफाई और सुख सुविधा का हर सामान देखकर वह हैरान था। यह सब उसकी सोच से भी परे था। वह सोचने लगा कि यहां रहकर पढ़ने के बाद पवन की ज़िंदगी भी खूबसूरत रंगों को साथ लिए रहेगी। पवन को आने वाले समय में अतीत में झांकने का समय ही नहीं मिलेगा। वह दिन भर घर पर बैठा हुआ बरसों बाद अपनी भाभी से गांव के बारे में और पवन के भविष्य के बारे में बातें करता रहा। उसका दिन का समय कैसे गुजर गया पता ही नहीं चला। दिन भर समीर के पोते और पोती के साथ खेलते कूदते पवन उनसे घुलमिल गया था। जहां उसका पूरा गांव शाम ढलने पर अंधेरा होते ही सुनसान लगने लगता था , वहीं यह शहर कभी नहीं रुकता था चलता रहता था।

रात को जल्दी खाना खाने की आदत के कारण वह और पवन नौ बजे खाना खाकर सोने के लिए अपने कमरे में चले गए। उसे अगले दिन सुबह वाली ट्रेन से अपने गांव भी लौटना था। घर के बाकी सदस्यों ने उस समय तक खाना नहीं खाया था। गांव में जमीन पर बिस्तर बिछाकर सोने के आदि होने से उसको और पवन को गद्देदार बेड पर नींद नहीं आ रही थी। जैसे – तैसे उनकी आंख लगी तो कभी धीमी और कभी तेज आवाजें सुनकर आंख खुल गई। उन्हे समझ नहीं आ रहा था कि आवाजें किस तरफ से आ रही थीं। उसने कमरे की खुली खिड़की से बाहर देखा ।

वहां अंधेरा था। वह पवन के साथ धीमे कदमों से अपने कमरे से बाहर निकला। उन्होने देखा कि समीर के कमरे का दरवाजा खुला था और अंदर लाइट जल रही थी। आवाजें भी उसी कमरे से आ रही थीं। समीर और परिवार वाले धीमी आवाज में बात कर रहे थे। आंगन की दीवार पर टंगी घड़ी रात का एक बजा रही थी।

वह और पवन ध्यान से उनकी बातें सुनने लगे। वो लोग पवन के उनके यहां रहने और पढ़ने के बारे में ही बात कर रहे थे। समीर सभी को समझाते हुए कहा रहा था पवन के यहां रहने और पढ़ने से सब का फायदा है। राजन के बच्चे एक दिन में ही उससे घुलमिल गए हैं। वह उनका ध्यान रखने के अलावा घर के छोटे – मोटे कामों में भी हाथ बंटाएगा। उसकी पढ़ाई के लिए मैंने अपने एक मित्र से बात कर ली है। उस मित्र के एन जी ओ में एक स्कूल में शाम को आर्थिक रुप से कमजोर परिवार के बच्चों को मुफ्त में पढ़ाया जाता है।

पवन घर के काम करने के बाद शाम कभी – कभी स्कूल भी चला जाएगा। इसमें अपना क्या खर्च लगना है ? दो चाय और दो वक्त का खाना । इसमें हमें घर का काम करने के लिए चौबीस घंटों के लिए एक विश्वासपात्र मिल रहा है। आज घर पर काम करने वाले नौकर रखने के लिए पचास तरह की परेशानियां हैं। आज के समय कोई अनजान व्यक्ति नौकर की हैसियत से चौबीसों घंटे घर पर रखना उचित नहीं है। यह कहते हुए समीर हंसने लगा था। उनकी बातों का सिलसिला वहीं थम गया। सभी उसकी बात से सहमत थे। कुछ देर में सभी अपने – अपने कमरे में चले गए।

समीर और उसके परिवार वालों की बातें सुनकर उसको और पवन को बहुत आश्चर्य हुआ। पवन को यहां रखकर पढ़ाने के नाम पर समीर का स्वार्थ उनके सामने आ गया था। जो उस परिवार के व्यवहार से अब तक पता नहीं चला था। समीर और उसके परिवार ने इस मिथ्या को झुठला दिया था कि वक़्त आने पर अपना खून ही साथ देता है। ये लोग पवन को भतीजे की तरह नहीं बल्कि एक नौकर की हैसियत से रखकर उसका वजूद ही छीन लेना चाहते थे। सच्चाई जानकर उसका और पवन का समीर के परिवार के प्रति सम्मोहन ,सम्मान और विश्वास टूट गए। उनके द्वारा बनाई गई समीर की आस्था की प्रतिमा यथार्थ से टकराकर टूट गई। उसे अपनी इस दशा पर आत्मग्लानि होने लगी। पवन की ओर देखकर उसने अपना मुंह मुजरिमों की तरह छुपा लिया। उसकी आंखों से आंसू बहने लगे।

पवन की पढ़ाई को लेकर उसके सारे सपने बिखरकर उसकी आंखों के सामने छितरा गए थे। उसने कमरे की खिड़की बंद कर दी। क्योंकि उससे होकर भी अंधेरा भीतर आ रहा था। उसकी समझ में आ गया था कि गुजरते वक़्त के साथ ज़िंदगी में रिश्तों के मायने बदल जाते हैं। उसे यहां आना अपने जीवन की सबसे बड़ी गलती लगने लगा था। वह उस घड़ी को मन ही मन में कोसने लगा जब उसने यहां आने का निर्णय लिया था। उसे समीर के घर का वातावरण काफी भारी लगने लगा था। पवन का अब वहां रहना स्वार्थ के समन्दर में भटकने जैसा था। पवन ने धीरे से अमर को कहा कि वह यहां रहकर नहीं पढ़ेगा।वह भी इस बात से सहमत था। उसने पवन को उसकी पढ़ाई को लेकर गांव जाकर ही कोई निर्णय लेने का कहा। किसी तरह रात गुजारकर दोनों सुबह होने पर गांव जाने के लिए तैयार होने लगे। समीर ने पवन के भी गांव जाने के बारे में पूछा । अमर ने अपने साहस की चिन्दियों को समेटते हुए इतना ही कहा पवन अभी बच्चा है। उसका इस नए माहौल में मन नहीं लग रहा। यह सुनकर समीर ने कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं करी।

अमर ने देखा कि एक ओर स्वार्थपूर्ण परिवार का मुखिया समीर खड़ा था। दूसरी ओर पूरी निष्ठा के साथ बचपन खड़ा था। उसकी आंखें नम हो गईं। वहां घर के सदस्यों से मिलकर वो दोनों स्टेशन की ओर रवाना हो गए। उन्हे विदा करते समय घर के किसी भी सदस्य के चेहरे पर किसी तरह का भाव नहीं था।

अचानक पास की पटरियों पर से तेज रफ्तार से गुजरती हुई ट्रेन की आवाज सुनकर अमर वर्तमान में लौटा। उसके सामने वाली बर्थ पर लेटा हुआ पवन नींद के आगोश में था। आसमान पर सूरज अपनी पूरी जवानी पर था। सूरज की किरणें खुली खिड़की से डिब्बे में प्रवेश कर रही थीं। अमर सोते हुए पवन के सिर पर हाथ फेरने लगा। मानो वह अपने आप से कह रहा था हमारी ज़िंदगी में ये दिन हमेशा थोड़े ही रहेंगे। हमें भी हमारे हिस्से का उजाला जरुर मिलेगा ।

सुधीर केवलिया

संपर्क : 09413279217

संजय उवाच

■ संजय भारद्वाज

9890122603

writersanjay@gmail.com

सहजानुभूति

शब्द ब्रह्म है। हर शब्द की अपनी सत्ता है। भले ही हमने पर्यायवाची के रूप में विभिन्न शब्दों को पढ़ा हो तथापि हर शब्द अपना विशिष्ट अस्तित्व रखता है। समानार्थी शब्द भी एक तरह से जुड़वा संतानों की तरह हैं, एक ही नाल से जुड़े पर अलग देह, अलग विचार, अलग भाव रखनेवाले। शब्दों की इस यात्रा में 'नग्न' और 'निर्वस्त्र' शब्द पर विचार हुआ।

इस विचार के साथ ही स्मरण हो आया शुकदेव जी महाराज से जुड़ा एक प्रसंग। शुकदेव जी, महर्षि वेदव्यास के पुत्र थे। ज्ञान पिपासा ऐसी कि बिना वस्त्र धारण किए ही साधना के लिए अरण्य की ओर चले। महर्षि वेदव्यास जानते थे कि पुत्र को साधना से विरक्त करना संभव नहीं तथापि ज्ञान पर पुत्र के प्रति आसक्त पिता भारी पड़ा। आगे-आगे निर्वस्त्र शुकदेव जी विरक्त भाव से भाग रहे हैं, पीछे-पीछे अपने वस्त्रों को संभालते पुत्र मोह में व्याकुल महर्षि वेदव्यास भी दौड़ लगा रहे हैं। अरण्य के आरंभिक क्षेत्र में एक सरोवर में कुछ कन्याएँ स्नान कर रही थीं। शुकदेव जी महाराज सरोवर के निकट से निकले।

कन्याओं ने उसी अवस्था में बाहर आकर उन्हें प्रणाम किया। महर्षि ने दूर से यह दृश्य देखा, आश्चर्यचकित हुए। आश्चर्य का चरम यह कि महर्षि को सरोवर की ओर आते देख सभी कन्याएँ सरोवर में उतर गईं। महर्षि सोच में पड़ गए। अथक ज्ञान साधना में डूबे रहने वाले महर्षि अपने जिज्ञासा को रोक नहीं पाए और उन कन्याओं से पूछा, मेरा युवा पुत्र निर्वस्त्र अवस्था में यहाँ से निकला तो तुम लोगों ने बाहर आकर प्रणाम किया। जबकि मुझ वस्त्रावृत्त वृद्ध ऋषि को आते देख तुम लोगों ने स्वयं को सरोवर के जल में छिपा लिया है। मैं इस अंतर का भेद समझ नहीं पाया। मेरा मार्गदर्शन करो कुमारिकाओ! एक कन्या ने गंभीरता के साथ कहा,महर्षि! आपका पुत्र नग्न है, निर्वस्त्र नहीं।

निर्वस्त्र होने और नग्न होने में अंतर है। अघोरी निर्वस्त्र है, साधु नग्न है। एक वासना से पीड़ित है, दूसरा साधना से उन्मीलित है। एक में कुटिलता है, दूसरे में दिव्यता है।

यूँ देखें तो अपनी आत्मा के आलोक में हर व्यक्ति निर्वस्त्र है। निर्वस्त्र से नग्न होने की अपनी यात्रा है। बहुत सरल है निर्वस्त्र होना, बहुत कठिन है नग्न होना। नागा साधु, दिगंबर मुनि होना, अपने आप में उत्कर्ष है। लेकिन यूँ ही नहीं होती उत्कर्ष की यात्रा। इस यात्रा को वांछित है सदाचार, वांछित है पारदर्शिता जो जन्म से मनुष्य को मिली है। प्राकृत होना है तो भीतर-बाहर के आवरण से मुक्त होना होगा, निष्पाप भाव से शिशु की भाँति नंग-धड़ंग होना होगा। इस संदर्भ में 'नंग-धड़ंग' शीर्षक की अपनी कविता स्मरण आ रही है,

तुम झूठ बोलने की
कोशिश करते हो
किसी सच की तरह,
तुम्हारा सच
पकड़ा जाता है
किसी झूठ की तरह..,
मेरी सलाह है,
जैसा महसूसते हो
वैसे ही जिया करो,
काँच की तरह
पारदर्शी रहा करो,
मन का प्राकृत रूप
आकर्षित करता है
प्रकृति के
सौंदर्य की तरह,
किसी नंग-धड़ंग
शिशु की तरह..!

स्मरण रहे, व्यक्ति नग्न अवस्था में जन्म लेता है, अगले तीन-चार वर्ष न्यूनाधिक प्राकृत ही रहता है। इस अवस्था के बालक या बालिका परमेश्वर का रूप कहलाते हैं। ईश्वरीय तत्व के लिए सहजानुभूति आवश्यक है। इस सहजानुभूति का मार्ग आडंबरों और आवरणों से मुक्त होने से निकलता है। मार्ग का चयन करना, न करना प्रत्येक का अपना निर्णय है।

बोध कथा

लालची मिठाई वाला

दिनपुर गांव में सोहन नाम का हलवाई रहता था। वह खूब बढ़िया और स्वादिष्ट मिठाइयां बनाने के लिए जाना जाता था। इसी वजह से उसकी दुकान पूरे गांव में मशहूर थी। पूरा गांव उसी की दुकान से मिठाई खरीदता था। वह और उसकी पत्नी मिलकर शुद्ध देसी घी में मिठाई बनाते थे। इससे मिठाइयां काफी अच्छी और स्वादिष्ट बनती थीं। हर रोज शाम होते-होते उसकी सारी मिठाइयां बिक जाती थीं और वह अच्छा मुनाफा भी कमा लेता था।

मिठाइयों से जैसे ही आमदनी बढ़ने लगी, सोहन के मन में और पैसा कमाने का लालच आने लग गया। अपने इसी लालच के चलते उसे एक तरकीब सूझी। वह शहर गया और वहां से एक दो चुम्बक के टुकड़े ले कर आ गया। उस टुकड़े को उसने अपने तराजू के नीचे लगा दिया। इसके बाद एक नया ग्राहक आया, जिसने सोहन के पास से एक किलो जलेबी खरीदी। इस बार तराजू में चुम्बक लगाने की वजह से सोहन को अधिक मुनाफा हुआ। उसने अपनी इस तरकीब के बारे में अपनी पत्नी को भी बताया, लेकिन उसकी पत्नी को सोहन की यह चालाकी अच्छी नहीं लगी। उसने सोहन को समझाया कि उसे अपने ग्राहकों के साथ इस तरह की धोखेबाजी नहीं करनी चाहिए, लेकिन सोहन ने अपनी पत्नी की बात बिल्कुल भी नहीं सुनी।

वो हर रोज तराजू के नीचे चुंबक लगाकर अपने ग्राहकों को धोखा देने लगा। इससे उसका मुनाफा बढ़कर कई गुना अधिक हो गया। इससे सोहन को काफी खुशी हुई। एक दिन सोहन की दुकान पर रवि नाम का एक नया लड़का आया। उसने सोहन से दो किलो जलेबी खरीदी। सोहन ने इसे भी चुम्बक लगे तराजू से तोलकर जलेबी दे दी। रवि ने जैसे ही जलेबी उठाई, उसे लगा कि जलेबी का वजन दो किलो से कम है। उसने अपना शक दूर करने के लिए सोहन से दोबारा से जलेबी को तोलने के लिए कहा।

रवि की बात सुनकर सोहन चिढ़ गया। उसने कहा, 'मेरे पास इतना फालतू समय नहीं है कि मैं बार-बार तुम्हारी जलेबी ही तोलता रहूं।' इतना कहकर उसने रवि को वहां से जाने के लिए कह दिया। सोहन मिठाई वाले की बात सुनने के बाद रवि जलेबी लेकर वहां से चला गया। वह एक दूसरी दुकान पर गया और वहां बैठे मिठाई वाले से अपनी जलेबी तोलने के लिए कहा। जब दूसरे दुकानदार ने जलेबी तोली, तो जलेबी सिर्फ डेढ़ किलो ही निकली। अब उसका शक यकीन में बदल गया था। उसे पता चल गया कि सोहन मिठाई वाले के तराजू में कुछ गड़बड़ है।

अब उसने तराजू की गड़बड़ को सबके सामने लाने के लिए खुद एक तराजू खरीद लिया और उसे ले जाकर सोहन मिठाई वाले के दुकान के पास ही रख दिया। फिर रवि अपने सभी गांव के लोगों को वहां पर इकट्ठा करने में लग गया। जैसे ही लोगों की थोड़ी भीड़ बढ़ने लगी, तो उसने गांव के लोगों को कहा कि आज मैं आप सभी लोगों को एक जादू दिखाऊंगा। यह जादू देखने के लिए बस आप लोगों को सोहन मिठाई वाले से खरीदा गया सामान एक बार इस तराजू में तोलना होगा। तब आप लोग देखेंगे कि कैसे सोहन मिठाई वाले के तराजू में तोली गई मिठाइयां इस दूसरे तराजू में अपने आप ही कम हो जाती हैं।

कुछ देर बाद एक-दो लोग मिठाई लेकर रवि के पास पहुंचे, तो उसने ऐसा करके भी दिखाया। इसके बाद सोहन के दुकान से जिसने भी मिठाई खरीदी थी, सभी ने रवि के तराजू में तोलकर देखा, तो सबकी मिठाइयां 250 ग्राम से लेकर आधा किलो तक कम निकली। यह सब देखकर लोगों को काफी हैरानी हुई।

वीर गाथा

सूबेदार उजीन सिंह शेखावत : दुश्मन की जिस पोस्ट से मिल रही थी आतंकियों को मदद, उसमें रच दिया वीरता का इतिहास

सूबेदार उजीन सिंह शेखावत का जन्म राजस्थान में सीकर जिले के अर्जुनपुरा गांव में 3 सितंबर, 1958 को हुआ था। माता मोहन कंवर और पिता त्रिलोक सिंह शेखावत के बहादुर बेटे उजीन सिंह अपनी स्कूली शिक्षा पूरी करने के बाद फरवरी 1976 में सेना में भर्ती हुए थे। उन्हें 19 ग्रेनेडियर्स में शामिल किया गया था। उजीन सिंह बहुत दृढ़ और बहादुर सैनिक थे। उन्होंने कई सैन्य अभियानों में भाग लिया था। वे अपने साथी जवानों का बहुत ख़याल रखते थे।

साल 2000 की शुरुआत में उजीन सिंह को जम्मू-कश्मीर के अखनूर के पल्लनवाला सेक्टर में तैनात किया गया था। यहां यूनिट द्वारा 'ऑपरेशन रक्षक' चलाया जा रहा था। इस इलाके में पाकिस्तानी आतंकवादी घुसपैठ की कोशिशें कर रहे थे। उन्हें पाक फौज की एक पोस्ट से लगातार मदद मिल रही थी। ऐसे में भारतीय सुरक्षा बलों के लिए जरूरी था कि वे उस पोस्ट के खिलाफ कार्रवाई करें।

22 जनवरी को सुरक्षा बलों ने एक खुफिया सूचना के आधार पर कार्रवाई करने की योजना बनाई थी। उस अभियान का नेतृत्व मेजर गोपाल सिंह कर रहे थे। उजीन सिंह को भी महत्त्वपूर्ण जिम्मेदारी सौंपी गई थी। योजना के अनुसार, भारतीय सैनिक संबंधित इलाके में पहुंचे और अभियान शुरू कर दिया। भारतीय सैनिकों ने दुश्मन की पोस्ट पर जोरदार धावा बोला। इससे पाकिस्तानी जवान बुरी तरह घबरा गए थे। उन्होंने भारतीय सैनिकों की ओर भारी गोलीबारी शुरू कर दी। इधर, सूबेदार उजीन सिंह अपने साथी जवानों को जरूरी निर्देश दे रहे थे। उन्होंने पाकिस्तान के दो जवानों को मार गिराया था।

हालांकि इस बीच उजीन सिंह के सीने पर गोली लग गई और वे गंभीर रूप से घायल हो गए। उन्होंने इसके बावजूद मुकाबला जारी रखा तथा पाकिस्तान के तीन और जवानों को ढेर कर दिया। अब तक उजीन सिंह का काफी खून बह चुका था। उन्हें गहरा जख्म लगा था, इसलिए जान चुके थे कि ज़िंदगी का साथ यहीं तक है। उन्होंने साथियों को अलविदा कहा और भारत मां के जयकारे के साथ हमेशा के लिए उसकी गोद में सो गए। सूबेदार उजीन सिंह शेखावत की दृढ़ता, धैर्य, कर्तव्य-परायणता और बलिदान को देश नमन करता है। उन्हें 'वीर चक्र' से सम्मानित किया गया।

महत्त्वपूर्ण

Published by Bhupendra Kumar on behalf of New Media Company, Arihant Plaza, 2nd Floor, 84-85, Wall Tax Road, Chennai-600 003 and printed by R. Kannan Adityan at Deviyin Kanmani Achagam, 246, Anna Salai, Thousand Lights, Chennai-600 006. Editor : Bhupendra Kumar (Responsible for selection of news under PRB Act.). Group Editor - Shreekant Parashar. Reproduction of any matter from this newspaper in whole or in part or any suchmanner without prior written permission from the publisher is strictly prohibited and punishable by law. **Regn No.RNI No. : TNHIN / 2013 / 52520**

पाठकों से अनुरोध है कि इस प्रकाशन में प्रकाशित किए जाने वाले किसी भी तरह के विज्ञापन (वैवाहिक, वर्गीकृत, टेंड़र एवं सजावटी इत्यादि) पर कोई भी कार्यवाही, प्रतिबद्धता या धनराशि का व्यय करने से पूर्व इन विज्ञापनों के बारे में समस्त जानकारी वह स्वयं प्राप्त कर लें। दक्षिण भारत राष्ट्रमत समूह उत्पादों की गुणवत्ता तथा सेवाओं के लिए विज्ञापनदाताओं द्वारा किए जा रहे किसी प्रकार के दावों के लिए जिम्मेदार नहीं है। अगर विज्ञापनदाता विज्ञापन में किया जा रहा दावा पूरा नहीं करता है तो दक्षिण भारत राष्ट्रमत समूह के संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक या मालिकान को पाठक किसी भी रूप में उत्तरदाई नहीं बना सकता।– **दक्षिण भारत राष्ट्रमत**

उद्घाटन

तिरुवनंतपुरम में सामान्य शिक्षा मंत्री वी शिवनकुट्टी ने एसईआरटी डिजिटल अभिलेखागार और ई-ऑफिस का उद्घाटन करते हुए।

मध्य प्रदेश : भैंसों पर रोजाना पांच हजार रुपये खर्च कर रही पुलिस

खंडवा। मध्य प्रदेश पुलिस को कानून-व्यवस्था बनाए रखने के अलावा पिछले कुछ दिनों से एक दर्जन से अधिक भैंसों की देखभाल करने की नयी जिम्मेदारी को संभालना पड़ रहा है। जावर थाना प्रभारी जे.पी. वर्मा ने बताया कि भैंसों को खिलाने पर प्रतिदिन पांच हजार रुपये खर्च किये जा रहे हैं। उन्होंने शनिवार को संवाददाताओं को बताया कि पांच दिन पहले जिले में अवैध रूप से ले जाए जा रही 17 भैंसों को जब्त किया गया था। वर्मा ने बताया कि ट्रक में जानवरों को अमानवीय तरीके से ठूंस कर रखे जाने के कारण पुलिस को कार्रवाई करनी पड़ी। उन्होंने बताया कि अदालत के आदेश के बाद भैंसों को वापस मालिक को सौंप दिया जाएगा। अधिकारी ने बताया, उन्हें खिलाने में प्रतिदिन लगभग चार से पांच हजार रुपये का खर्च आता है। मैं यह खर्च वहन कर रहा हूं। हमारे कर्मचारी दिन-रात उनकी देखभाल कर रहे हैं।

भारत हमारे क्षेत्र में अपने तटरक्षक बल की गतिविधियों की जानकारी दे: मालदीव

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

माले। मालदीव की सरकार ने औपचारिक रूप से भारत सरकार से उस घटना का व्यापक विवरण प्रदान करने का अनुरोध किया है जिसमें भारतीय तटरक्षक बल के कर्मी कथित तौर पर द्वीपीय देश के आर्थिक क्षेत्र के भीतर संचालित तीन मछली पकड़ने वाले जहाजों पर चढ़ गए थे। यह घटनाक्रम दोनों देशों के बीच उस कूटनीतिक विवाद में नवीनतम है, जिसके कारण राष्ट्रपति मोहम्मद मुइज्जू के पिछले साल नवंबर में मालदीव में सत्ता में आने के बाद द्विपक्षीय संबंधों में तनाव पैदा हो गया था। मुइज्जू को व्यापक रूप से चीन समर्थक नेता के रूप में देखा जाता है।

मालदीव के आरोपों पर भारत सरकार की तरफ से तत्काल कोई प्रतिक्रिया नहीं दी गई है। मालदीव के रक्षा मंत्रालय ने शुक्रवार को एक बयान में दावा किया कि 31 जनवरी को, भारतीय सेना ने मालदीव के विशेष आर्थिक क्षेत्र (ईईजेड) के भीतर मछली पकड़ने की गतिविधियों में लगी मालदीव की एक मछली पकड़ने वाली नौका को रोक लिया जो कि धिद्धो, हा अलीफू एटोल से 72 समुद्री मील उत्तर पूर्व में स्थित है। इसमें कहा गया है कि भारतीय सैनिक संबंधित अधिकारियों से पूर्व परामर्श के बिना मालदीव के ईईजेड के भीतर मछली पकड़ने वाली तीन नौकाओं पर सवार हो गए, जिससे अंतरराष्ट्रीय समुद्री कानूनों और नियमों का उल्लंघन हुआ।

इसमें कहा गया, परिणामस्वरूप, मालदीव सरकार ने विदेश मंत्रालय के माध्यम से एक आधिकारिक पहल की है, जिसमें भारत सरकार से घटना का व्यापक विवरण मांगा गया है। बयान में कहा गया है कि भारतीय तटरक्षक जहाज 246 और भारतीय तटरक्षक जहाज 253 की बोर्डिंग टीम मछली पकड़ने वाली नौकाओं पर सवार लोगों से पूछताछ के लिए जिम्मेदार थीं।

लालकृष्ण आडवाणी को भारत रत्न : देश की राजनीति और भाजपा में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका के प्रति कृतज्ञता

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

नयी दिल्ली। लालकृष्ण आडवाणी भारतीय राजनीति की वह शख्सियत हैं, जिन्होंने अपने दौर की राजनीति को अपने प्रखर राष्ट्रवादी विचारों और अपनी 'रथयात्राओं' से प्रभावित किया तथा 'धर्मनिरपेक्षता' के विमर्श के मुकाबले हिंदुत्व की राजनीति के माध्यम से भारतीय जनता पार्टी को राष्ट्रीय फलक पर मजबूती से स्थापित करने में मदद की। आडवाणी को 'भारत रत्न' पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के नौ वर्ष बाद यह सम्मान दिया गया है। दोनों नेताओं ने मिलकर पांच दशकों से अधिक समय तक जनसंघ और फिर भाजपा का नेतृत्व किया।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने शनिवार को आडवाणी (96) को देश के सर्वोच्च नागरिक सम्मान से सम्मानित किये जाने की घोषणा की। इसी साल अयोध्या में राम मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा समारोह संपन्न हुआ है। राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा भाजपा के लिए एक अत्यंत भावनात्मक मुद्दे के ''विजयी समापन'' का प्रतीक है,

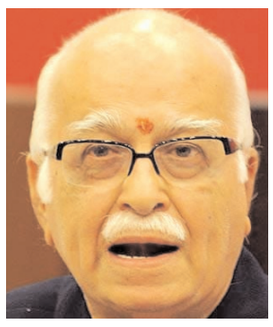

जिसे 1990 में आडवाणी की 'राम रथ यात्रा' के माध्यम से जनता में लोकप्रियता मिली और हिंदुत्ववादी पार्टी भाजपा के लगातार आगे बढ़ने का रास्ता खुला। भाजपा के एक नेता ने कहा कि यह बहुत उपयुक्त है कि मंदिर आंदोलन के एक प्रमुख सूत्रधार को इस वर्ष मोदी सरकार द्वारा सम्मान दिया गया है। भाजपा द्वारा राम मंदिर का मुद्दा उठाए जाने से पहले विश्व हिंदू परिषद सहित अन्य हिंदूवादी समूह मंदिर के लिए आंदोलन कर रहे थे। आडवाणी की रथ यात्रा को इसे एक जन आंदोलन बनाने का श्रेय दिया जाता है। मोदी स्वयं इस यात्रा के प्रमुख आयोजक थे। आडवाणी ने ''छद्म धर्मनिरपेक्षता'' और ''तुष्टिकरण की राजनीति'' जैसे वाक्यांश गढ़े हों या न गढ़े हों, लेकिन उन्होंने ही इन्हें हिंदुत्व की राजनीति के लोकप्रिय मुहावरे में बदल दिया। आडवाणी के समकालीनों ने एक राजनीतिक रणनीतिकार और संगठन-निर्माता के रूप में उनकी प्रशंसा की। उनकी अध्यक्षता में भाजपा ने 1989 में अपने पालमपुर सम्मेलन के दौरान मंदिर निर्माण के समर्थन में एक प्रस्ताव अपनाकर रामजन्मभूमि आंदोलन को अपना पूरा समर्थन देने का फैसला किया, जिसे भक्त भगवान राम का जन्मस्थान मानते हैं।

मार्च में रिलीज होगी फिल्म 'द क्रू'

मुंबई/वार्ता

बॉलीवुड अभिनेत्री करीना कपूर, कृति सैनन और तब्बू की फिल्म द क्रू 29 मार्च में रिलीज होगी। फिल्म 'द क्रू' में करीना कपूर, तब्बू और कृति सैनन लीड रोल में हैं।मेकर्स ने 'द क्रू' की रिलीज डेट का अनाउंसमेंट कर दिया है।अनाउंसमेंट वीडियो में करीना, तब्बू और कृति एयर होस्टेस की रेड यूनीफॉर्म में दिख रही हैं।करीना कपूर , तब्बू और कृति सैनन एयरपोर्ट की एक गैलरी में चलते हुए दिख रही हैं। वीडियो के बैकग्राउंड में आवाज आती है,देवियों और सज्जनों, मैं आपका कैप्टन बोल रहा हूं।

आज की फ्लाइट में आपका सबका स्वागत है। हमारा क्रू आपका बहुत ख्याल रखेगा, लेकिन आपसे एक अनुरोध है कि अपनी चोली कसकर पकड़ लें ताकि दिल बाहर ना गिर जाए ।वीडियो के आखिरी में 'द क्रू' की रिलीज डेट 29 मार्च बतायी गयी है।

करीना कपूर खान ने सोशल मीडिया पर कैप्शन में लिखा, अपनी कमर कस लें, अपना पॉपकॉर्न तैयार करें, और परोसने के लिए तैयार हो जाएं. द क्रू, मार्च में सिनेमाघरों में रिलीज होगी! करीना ने कैप्शन में रिया कपूर, कपिल शर्मा और एकता कपूर को भी टैग किया और बताया कि फिल्म में इनकी स्पेशल अपीयरेंस होगी।

शूटिंग के लिए भारत अगला गंतव्य होना चाहिए : मीरा चोपड़ा

मुंबई/एजेन्सी

30 जनवरी 2024 को मुंबई में मोदी का विजन: भारत – 5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था विषय पर एक सम्मेलन आयोजित किया गया था। अभिनेत्री मीरा चोपड़ा, जो अतिथि वक्ता थीं, ने सम्मानित सभा को संबोधित करते हुए एक महत्वपूर्ण विचार साझा किया। हाल ही में हमारे माननीय प्रधान मंत्री – नरेंद्र मोदी – ने कहा कि लोगों को वेड इन इंडिया के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए ताकि धन देश के भीतर ही रहे। कॉन्क्लेव में बोलते हुए चोपड़ा ने उस बिंदु को छुआ और एक कदम आगे बढ़ते हुए कहा, 'फिल्मों की शूटिंग के लिए अगला गंतव्य भारत होना चाहिए, केवल शादी ही क्यों। विदेशी

निर्माताओं को अपनी फिल्मों की शूटिंग के लिए भारत भी आना चाहिए। लेकिन इसकी शुरुआत घरेलू टीमों से होनी चाहिए! हमारे प्रोड्यूसर विदेश जाकर शूटिंग में इतना पैसा खर्च करते हैं! इससे ब्रिटेन सरकार को इतनी कमाई हुई है. भारत वास्तव में सुंदर और आश्चर्यजनक है – दक्षिणी भाग संस्कृति में बहुत समृद्ध है, उत्तर पूर्व बहुत सुंदर है। ऐसी विविधता आपको दुनिया के किसी भी हिस्से में नहीं मिलती। नीतियां इस तरह बनाई जानी चाहिए कि हमारे भारतीय निर्माता भारत में शूटिंग शुरू करें और इस तरह हम अपनी जीडीपी में भी अधिक योगदान देंगे।

मीरा चोपड़ा आखिरी बार जी5 की फिल्म सफेद में नजर आई थीं। उन्होंने बरखा बिष्ट, छाया कदम और जमील खान के साथ स्क्रीन स्पेस साझा किया।

इससे पहले, अभिनेत्री ने अजय बहल की सेक्शन 375 में अभिनय किया था। उनकी आगामी परियोजनाओं में सुपर वुमेन शामिल है जहां वह एक अलैंगिक की भूमिका निभाएंगी।

मनोज वाजपेयी ने कार्तिक आर्यन की तारीफ की

मुंबई/वार्ता

बॉलीवुड के जानेमाने अभिनेता मनोज बाजपेयी ने कार्तिक आर्यन की तारीफ की है। कार्तिक आर्यन ने हाल ही में एक अवॉर्ड शो में भाग लिया, जहां उन्हें फिल्म सत्यप्रेम की कथा में सत्तू के किरदार के लिए सर्वश्रेष्ठ अभिनेता (क्रिटिक) का अवॉर्ड मिला। वहीं, जब मनोज बाजपेयी को अवॉर्ड मिला, तो उन्होंने यह अवॉर्ड खास तौर से कार्तिक आर्यन को समर्पित किया।

मनोज बाजपेयी ने स्पीच देते हुए कार्तिक को मंच पर बुलाया और उन्हें इंडस्ट्री में आउटसाइडर लोगों का सच्चा प्रतिनिधि बताया और अपना अवॉर्ड भी उन्हें समर्पित किया।

मनोज बाजपेयी ने कहा, कार्तिक अपनी आंखों में सितारे लेकर बाहर से आने वाले सभी लोगों के सच्चे प्रतिनिधि हैं और इसे सरासर लचीलापन, बुद्धिमत्ता और पूर्ण समर्पण के साथ बनाते हैं। इसलिए निर्देशक द्वारा धन्यवाद देने से पहले, मैं आपको और आप जैसे सभी अभिनेताओं को धन्यवाद देता हूं जो इतना साहस जुटा रहे हैं।जो इस बड़ी सिटी मुंबई आए हैं और दरवाजा खुलने तक हर समय जोर-जोर से, जोर-जोर से और जोर-जोर से दरवाजा खटखटाते रहते हैं, जब तक वह खुल न जाए। तो यह आपके लिए भी है, कार्तिक।

ओटीटी ने कई लोगों को स्टार बनाया : शिल्पा शेट्टी

मुंबई/एजेन्सी

वर्ष 1990 के दशक में बड़े पर्दे पर राज करने वाली एक्ट्रेस शिल्पा शेट्टी अपने काम से ओटीटी पर छा रही हैं। उन्होंने कहा कि यह उनके लिए एक बड़ी बात है कि वह खुद को फिर से आगे बढ़ाने में सक्षम हैं। यह पूछे जाने पर कि ओटीटी स्पेस पर 'सुखी' और 'इंडियन पुलिस फोर्स' जैसी प्रोजेक्टस के साथ जुड़ना कैसा लगता है, शिल्पा ने आईएएनएस से कहा, अलग-अलग प्लेटफार्मों के जरिए अपने काम से दर्शकों को हैरान करना, उनका प्यार पाना, उनके द्वारा पसंद किया जाना अच्छा लगता है। मैं इसे एक बड़ी प्रशंसा के रूप में लेती हूं कि

मैं खुद को फिर से आगे बढ़ाने में सक्षम हूं।'' शिल्पा ने टैलेंट को सामने लाने के लिए ओटीटी सीन्स की प्रशंसा की। ''कोविड के समय में ऐसे कई सितारे थे, जो इस प्लेटफॉर्म द्वारा बनाए गए थे, एक उदाहरण पंकज त्रिपाठी हैं, इतने लंबे समय तक इंडस्ट्री में रहने के चलते लोगों ने उनके टैलेंट को देखा। उनके टैलेंट में स्टार क्वालिटी थी और विक्रांत मैसी जैसे कई सितारे उनमें से कुछ हैं।'' ''मैं कहूंगी कि ओटीटी ज्यादा लोगों और दुनिया भर के दर्शकों तक पहुंचता है। इसलिए, आप यह नहीं आंक सकते कि ओटीटी एक एक्टर की प्रोफ़ाइल में क्या लाता है। शिल्पा का लेटेस्ट प्रोजेक्ट रोहित शेट्टी की सीरीज 'इंडियन पुलिस फोर्स' है। फिल्म निर्माता की यह एक्शन-थ्रिलर कॉप यूनिवर्स पर आधारित है।

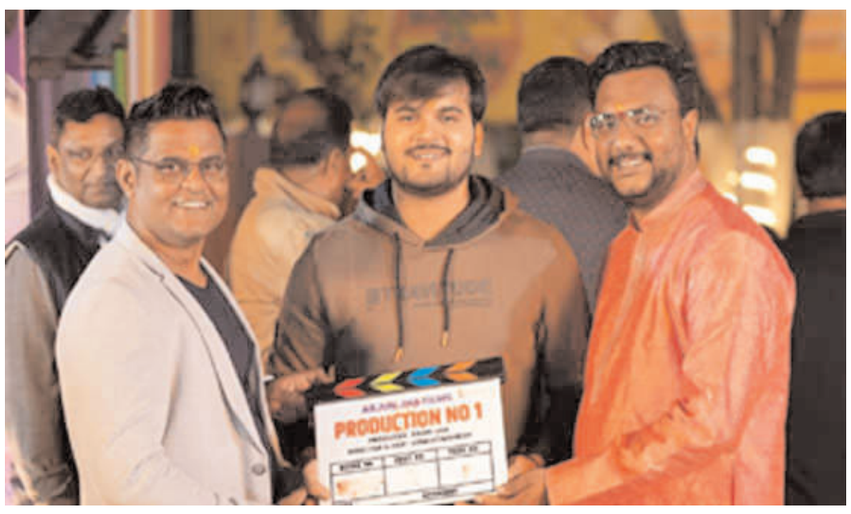

फिल्म 'नंबर वन' की शूटिंग शुरू

मुंबई/वार्ता

भोजपुरी सिनेमा के जानेमाने अभिनेता अरविंद अकेला कल्लू की फिल्म प्रोडक्शन नंबर की शूटिंग शुरू हो गयी। फिल्म प्रोडक्शन नंबर वन की शूटिंग झारखंड की रांची में शुरू हो गयी है। इस फिल्म के निर्माता बद्रीनाथ झा ने बताया कि यह एक नए तरीके की फिल्म है। इस फिल्म के निर्माण में लेटेस्ट कैमरा और तकनीक का इस्तेमाल किया जा रहा है। फिल्म की पटकथा भी मजेदार और दर्शकों को बांधकर रखने वाली होगी। इस फिल्म में बॉलीवुड से सुयेश राय, दयाशंकर पांडे, अभिषेक झा के साथ बंगाली कलाकार भी नजर आएंगे। हमने फिल्म में इस तरह से नया आधार क्रिएट करने की कोशिश की है। हम कह सकते हैं कि देश की मुख्य फिल्म इंडस्ट्री से आए कलाकारों और तकनीशियन के साथ भोजपुरी में हम कुछ नया करने का प्रयास कर रहे हैं।

वही फिल्म को लेकर अरविंद अकेला कल्लू ने कहा कि प्रोडक्शन नंबर वन मनोरंजन का भरपूर खजाना लेकर आ रहा है। इसमें एक से बढ़कर एक प्रतिभाशाली कलाकार और टेक्निशियनों के साथ काम करने का अवसर मिला। फिल्म की कहानी बेजोड़ है। उम्मीद है कि यह फिल्म जब पर्दे पर रिलीज होगी तो बॉक्स ऑफिस के सारे रिकॉर्ड टूट जाएंगे। यह मेरी लाइफ कि अब तक की सबसे अलग तरीके की फिल्म है इसके लिए फिल्म का निर्माता और निर्देशकों का मैं आभार व्यक्त करता हूं। ऐसी फिल्में भोजपुरी में इसके ग्राफ को ऊपर की ओर ले जाने वाली होती है। उन्होंने कहा कि भोजपुरी की पहुंच आज दुनिया भर में है तो हमें उसे हिसाब से फिल्म में भी करनी होगी, जिससे हमारी फिल्मों को दुनिया भर के दर्शकों के बीच रिकॉग्निशन मिले।

बद्री झा फिल्म्स और अरुण झा फिल्म्स के बैनर तले बनी फिल्म प्रोडक्शन नंबर 1 की शूटिंग जमशेदपुर, रांची, कोलकाता, लेह और लद्दाख में की जाएगी। इस फिल्म में अरविंद अकेला कल्लू के साथ दर्शना बनिक, खराज मुखर्जी, दया शंकर पाण्डेय, सुवेश राय, अभिषेक झा, रीना रानी और लावणी सरकार मुख्य भूमिका में हैं। फिल्म की पटकथा राकेश त्रिपाठी ने लिखी है।

मैं जीवित हूं : पूनम पांडे ने सर्विकल कैंसर से मौत की खबरों के बाद कहा

मुंबई/भाषा

सर्विकल (गर्भाशय से संबंधित) कैंसर से अपनी मौत की खबरों के बीच अभिनेत्री पूनम पांडे ने शनिवार को सोशल मीडिया पर एक पोस्ट करके जानकारी दी कि वह अभी जीवित हैं। इसके साथ ही एक दिन पहले आयी उनकी मौत की खबर फर्जी निकली। अभिनेत्री तथा उनकी टीम ने सर्विकल कैंसर के बारे अहम जागरूकता फैलाने के लिए यह कदम उठाया। उनकी मौत की खबर के बाद सोशल मीडिया पर गंभीर बहस छिड़ गयी थी। कई मीडिया संगठनों ने पूनम पांडे की मौत की खबर दी थी लेकिन 'पीटीआई-भाषा' ने अपनी खबरों में कभी उनकी मौत की पुष्टि नहीं की। पूनम पांडे (32) ने इंस्टाग्राम पर एक वीडियो पोस्ट करके कहा, मुझे आप सभी के साथ कुछ महत्वपूर्ण बातें साझा करने के लिए मजबूर होना पड़ा- मैं यहां हूं, जीवित हूं। मुझे सर्विकल कैंसर नहीं हुआ है लेकिन दुखद रूप से इसने हजारों महिलाओं की जान ली है जिनके पास इस बीमारी से निपटने के बारे में जानकारी नहीं है।

अपने बयानों से 2011 में चर्चा में आने वाली अभिनेत्री ने कहा कि वह इस बीमारी के बारे में अहम जानकारी प्रसारित करके यह सुनिश्चित करना चाहती हैं कि हर एक महिला को इस बीमारी से निपटने के बारे में पता हो। उन्होंने पोस्ट में कहा, आइए मिलकर इस बीमारी के विनाशकारी असर और सर्विकल कैंसर से मौत को खत्म करें। इसके बाद एक वीडियो में पांडे ने इस कदम के लिए माफी मांगी लेकिन कहा कि वह इस बीमारी के बारे में जागरूकता फैलाना चाहती हैं। उन्होंने कहा, जिन लोगों को मैंने ठेस पहुंचायी है, मैं उनसे माफी मांगती हूं। मेरा मकसद : लोगों को यह बताना था कि हम सर्विकल कैंसर के बारे में पर्याप्त चर्चा नहीं कर रहे हैं।

पांडे ने कहा कि सर्विकल कैंसर से उनके निधन की खबर ने काफी हद तक उद्देश्य पूरा कर दिया। अभिनेत्री ने कहा, मैं जानती हूं कि आपको इस खबर से कितना बुरा लगा होगा लेकिन मैं आपसे इस बीमारी पर भी विचार करने का अनुरोध करती हूं। इस कदम पर अपनी राय देने से पहले मैं आपसे दुनियाभर में महिलाओं के लिए पैदा हो रही चिंताजनक स्थिति पर गौर करने का अनुरोध करती हूं। इस मुद्दे को लेकर जागरूकता का अभाव ही वह वजह है जिसके कारण मुझे यह कदम उठाना पड़ा। उनकी मौत की खबर तब आयी जब एक दिन पहले ही केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने 2024 के अपने अंतरिम बजट में घोषणा की कि सरकार सर्विकल कैंसर की रोकथाम के लिए 9 से 14 वर्ष के आयु वर्ग की लड़कियों के टीकाकरण को प्रोत्साहित करेगी।

पांडे ने कहा, एक दिन पहले ही केंद्रीय बजट में भी इस बीमारी का उल्लेख किया गया था लेकिन मैं विश्वास के साथ कह सकती हूं कि केवल कुछ ही लोग इसके लिए पंजीकरण करेंगे। यह हैरानी भरा है कि इतनी महत्वपूर्ण जानकारी भी प्रेस का ध्यान खींचने में नाकाम रही जब तक कि गर्भाशय ग्रीवा के कैंसर से मेरी मौत की खबर के साथ कहानी में मोड़ नहीं आया था। अभिनेत्री की प्रचार टीम ने शुक्रवार को उनके निधन की सूचना दी थी लेकिन उनकी मौत कब हुई, कहां हुई इस बारे में जानकारी नहीं दी गई थी।

पांडे सुर्खियों में आने के लिए पहले भी इस तरह के कदम उठा चुकी हैं। पांडे अपने इस बयान से चर्चा में आई थीं कि अगर भारत 2011 का क्रिकेट विश्व कप जीतेगा, तो वह अपने कपड़े उतार देंगी। पांडे के इंस्टाग्राम पेज पर एक पोस्ट में शुक्रवार को उनके निधन के बारे में सूचना दी गई। बयान में कहा गया था, यह सुबह हमारे लिए कठिन है। आपको यह बताते हुए बहुत दुख हो रहा है कि हमने अपनी प्यारी पूनम को सर्विकल कैंसर के कारण खो दिया है। हर जीवित व्यक्ति जो कभी भी उसके संपर्क में आया, उससे वह बेहद प्यार, स्नेह से मिलीं।

इस संदेश पर संदेह तब पैदा हुआ, जब इंस्टाग्राम पर कई फॉलोअर्स ने कहा कि यह खबर फर्जी हो सकती है, क्योंकि पांडे को

आखिरी बार महज तीन दिन पहले गोवा में देखा गया था और उससे पहले भी अक्सर देखा गया था। पांडे के बारे में दिन भर कयास लगाए जाने के बीच लॉक अप में उनके सह-प्रतियोगी फारुकी और होस्ट कंगना रनौत ने उनकी मृत्यु पर शोक व्यक्त किया था। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) की संस्था 'इंटरनेशनल एजेंसी फॉर रिसर्च ऑन कैंसर' (आईएआरसी) के अनुसार, भारत में महिलाओं में सर्विकल कैंसर दूसरा सबसे आम कैंसर है और नए कैंसर के मामलों में इस कैंसर की हिस्सेदारी लगभग 18 प्रतिशत है।

RNI No. : TNHIN/2013/52520
Regn No. : TN/CCN/613/2014-2016
posted at Patrika Channel,
Egmore RMS, Chennai-8

जिस प्रकार फूलों में सर्वश्रेष्ठ गुलाब होता है वैसे ही गुरुओं में भी सर्वश्रेष्ठ है गुरु राजेन्द्रसूरीश्वरजी। गुरु का उपकार जिस पर हो जाता है उसका कल्याण हो जाता है। गुरु हमेशा पुण्य से व पुण्यशाली को मिलते हैं और जिसको भी मिलते है उसका जीवन सफल हो जाता है। राजेन्द्र सूरी ने जिनशान के लिए अनेक कार्य किए तथा उन्हें अनेक पदवियों से नवाजा गया परन्तु उन्होंने कभी की पद व पदवी को अपने ऊपर हावी नहीं होने दिया। राजेन्द्र सूरी एवं सरल व तपस्वी संत थे।

मुलाकात

दक्षिण भारत राष्ट्रमत

राजस्थान की उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी से जयपुर में देश के दाधीच समाज के बंधुओं ने मुलाकात कर उन्हें उनके जन्मदिन की बधाई दी। इस मौके पर चेन्नई के गोविन्द तिवारी, सोलापुर के संजय व्यास, राउलकेला के राजकुमार दाधीच नई दिल्ली के सुरेश दाधीच, मकराना के कैलाश दाधीच आदि ने उपमुख्यमंत्री से मुलाकात की।

सात दिवसीय एक्यूप्रेशर चिकित्सा शिविर का हुआ शुभारंभ

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

चेन्नई। श्री अग्रवाल सभा द्वारा सात दिवसीय चिकित्सा शिविर का आयोजन अन्ना नगर स्थित एसआरकेके अग्रवाल सभा भवन में सुबह 9 बजे अग्रवाल सभा के महासचिव जगदीश प्रसाद अग्रवाल, कोषाध्यक्ष बाबूलाल केडिया, बालगोविंद गुप्ता, वासुदेव अग्रवाल ,सुभाष गोएल और सुनीता अग्रवाल की उपस्थिति में महाराजा अग्रसेन की प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पण एवं दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया।

सात दिवसीय एक्यूप्रेशर चिकित्सा शिविर में मरीज सुबह 9 से 1 बजे तक तथा सायं 4 बजे से 8 बजे तक दो पालियों में एक्यूप्रेशर थेरेपिस्ट से परामर्श के उपरांत अपना इलाज करा सकेंगे। एक्युप्रेशर थैरेपिस्ट रविंद्र कुमार ने बताया कि वह अब तक 500 से अधिक चिकित्सा शिविर देश के 10 से अधिक राज्यों में आयोजित कर चुके हैं जिससे हजारों लोग जोड़ों के दर्द, पैर कंधे, कमर, घुटने कोहनी के दर्द से राहत पाकर लाभान्वित हो चुके हैं। उन्होंने बताया कि किसी भी मरीज को सात दिनों तक एक्युप्रेशर चिकित्सा का प्रशिक्षण देने के उपरांत वह इसे अपने घर पर आसानी से करके लाभ उठा सकता है। उन्होंने कहा कि इस उपचार का कोई साइड इफेक्ट नहीं है और यह सस्ती तथा जोड़ों के दर्द से आराम की कारगर विधि है। कार्यक्रम के प्रथम दिन प्रथम पाली में सैकड़ों की संख्या में लोग चिकित्सा शिविर में उपचार कराने के लिए उत्सुक दिखे। चिकित्सा शिविर में अग्रवाल सभा के पूर्व अध्यक्ष अशोक केडिया, राजेंद्र कुमार गुप्ता सहित अग्रवाल सभा के अनेक गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

मुख्य वक्ता भावना दुबे संबोधित करते हुए।

'अनमोल रिश्ता सास बहू का' विषय पर कार्यशाला

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

कोयम्बटूर। यहां के गांधीपार्क स्थित तेरापंथ भवन में तेरापंथ महिला मंडल ने 'अनमोल रिश्ता सास बहू का' विषय पर कार्यशाला का आयोजन तेरापंथ भवन में किया। मंडल की अध्यक्ष मंजू सेठिया ने सबका स्वागत किया। मंडल की सदस्यों ने प्रेरणा गीत का संगान किया।

इस कार्यशाला में मुख्य वक्ता के रुप में भावना दुबे उपस्थित थीं। भावना ने चार वाक्यों के द्वारा इस रिश्ते को बहुत ही विस्तार में समझाया। 'कनेक्ट फोर यू करेक्ट' मतलब पहले जुड़िए फिर एक दूसरे की सुने फिर करेक्ट कीजिए। भरा नहीं करते घाव शब्दों से मतलब कुछ भी बोलने से पहले सोचे। हम अलग है पर गलत नहीं है मतलब हम जिस जमाने में थे वह अलग था और अब अलग है गलत दोनों ही नहीं है इसलिए समझ कर हमें एडजस्टमेंट करना है। सास बहू दोनों में दोस्ती हो न की रिश्ता मतलब दोस्ती में एक दूसरे को समझते हैं रिश्ते में वह थोड़ा कड़वापन आ जाता है इसीलिए दोस्त बनकर रहे।

आभार ज्ञापन मंत्री सुमन सुराणा ने किया। कार्यक्रम का संचालन उपाध्यक्ष व उपासिका सुशीला बाफना ने किया। कार्यक्रम में 13 सास बहू की जोड़ियों ने भाग लिया। दो जोड़ियों को पुरस्कृत किया गया। इनके निर्णायक मुख्य वक्ता भावना दुबे थी। इस कार्यक्रम में बड़ी संख्या में महिलाओं ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई।

बेंगलूरु की ओर विहार

दक्षिण भारत राष्ट्रमत

साध्वीश्री लावण्याश्रीजी ने गुरु इंगित के पालन करते हुए होसूर से बेंगलूरु की ओर विहार प्रारंभ किया। विहार सेवा में जितेंद्र घोषल, तेयुप राजाजीनगर से अध्यक्ष कमलेश गन्ना, राजेश देरासरिया, अरविंद कोठारी, जयंतीलालगांधी एवं हरीश पोरवाड़, तेयुप गांधीनगर के प्रसन्न धोका, अंकित छाजेड़, विमल धारीवाल, सुधीरा पोकरना आदि ने सेवा दी। ज्ञातव्य है कि साध्वीश्री 7 फरवरी को नगर प्रवेश करते हुए अत्तिबेले स्थित पार्श्व सुशीलधाम पहुंचेंगी।

दक्षिण भारत राष्ट्रमत

सम्मानित

बेंगलूरु के अग्रणी समाजसेवी कुमारपाल सिसोदिया के पौत्र विवानकुश सिसोदिया ने इंडिया रोबोटिक्स लीग द्वारा आयोजित राष्ट्रीय चैंपियनशिप में रोबोटिक्स में ओवरऑल चैंपियनशिप अवॉर्ड जीता है। इस अवसर पर उसे पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

अलसूर संघ ने साध्वी स्वर्णप्रभा से चातुर्मास के लिए किया निवेदन

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

बेंगलूरु। शहर के श्वेतांबर स्थानकवासी जैन श्रावक संघ अलसूर के सदस्यों ने केजीएफ में विराजित आचार्य विजयराजजी म.सा. की शिष्या साध्वीश्री स्वर्णप्रभाजी के दर्शन कर उन्हें वर्ष 2024 में अलसूर में चातुर्मास करते हुए निवेदन किया। संघ अध्यक्ष नेमीचन्द चोरडिया के नेतृत्व में अलसूर संघ की ओर से मंत्री अभयकुमार बांठिया ने बताया कि अलसूर में पूर्व में भी शांत क्रांति संघ के आचार्यश्री विजयराजजी एवं साध्वीश्री नेहाश्रीजी के यशस्वी चातुर्मास हुए हैं। अलसूर संघ शीघ्र ही संघ नायक आचार्यश्री विजयराजजी के दर्शन कर महासती जी के चातुर्मास हेतु निवेदन कर विनती पत्र प्रस्तुत करेगा। इस मौके पर साध्वीश्री स्वर्णप्रभाजी ने कहा कि अलसूर एक परिचित और धार्मिक क्षेत्र हैं। यहां के श्रावक श्राविका सुज्ञ श्रद्धासंपन्न और सेवाभावी हैं।

चातुर्मास प्रदान करने का अधिकार आचार्य का होता है जो होली पर चातुर्मास स्थल की घोषणा करते हैं। केजीएफ संघ के अध्यक्ष धर्मीचन्द धारीवाल ने अलसूर संघ के प्रकाशचन्द नाहटा, तेजराज तातेड, धनपतराज तातेड, उगमराज मुथा आदि का स्वागत किया। इस मौके पर ओमप्रकाश लुणावत भी उपस्थित थे।

दक्षिण भारत राष्ट्रमत

सहयोग

मैसूर के रोटरी क्लब के अध्यक्ष प्रवीणकुमार, पूर्व अध्यक्ष चेतन विश्वनाथ, रामचन्द्रराजे अर्स, डॉ चन्द्रोखर व सामाजिक सेवा निदेशक गौतम सालेचा ने सामाजिक सेवा सहयोग अभियान के तहत एक फल विक्रेता को छाया छतरी व व्यापार विकास के लिए आर्थिक सहयोग प्रदान किया।

तेरापंथ महिला मंडल गांधीनगर ने आयोजित किया कैंसर जागरुकता शिविर

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

बेंगलूरु। शहर के तेरापंथ महिला मंडल गांधीनगर के तत्वाधान में विश्व कैंसर दिवस के उपलक्ष्य में आडुगोडी स्थित पुलिस क्वार्टर्स में कैंसर जागरुकता शिविर का आयोजन किया गया। अध्यक्ष रिजु डूंगरवाल ने सभी का स्वागत करते हुए अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के कैंसर जागरुकता योजना जो वर्ष भर चलेगी उसकी जानकारी दी।

मुख्य वक्ता अपोलो हॉस्पिटल की लीड सर्जन डॉ जयंती थुमसी ने ब्रेस्ट कैंसर और सर्वाइकल कैंसर के लक्षण और उससे बचाव की जानकारी दी। उन्होंने कहा कि 40 वर्ष उम्र की हर महिला को हर साल इसकी जांच अवश्य करवानी चाहिए और 20 वर्ष की ऊपर की कन्याओं को घर पर ही सेल्फ एग्जामिनेशन के बारे में जानकारी दी। उन्होंने कहा कि कैंसर समय पर पता चलने पर उसका इलाज को सकता है और व्यक्ति पूर्ण रूप से ठीक हो सकता है।

निरामयी संस्था के सहयोग से निशुल्क थर्मल स्क्रीनिंग के द्वारा महिलाओं की जांच की गई । निरामयी संस्था की शिरीन चोपड़ा ने अपनी संस्था के बारे में और थर्मल स्क्रीनिंग की जानकारी दी। उन्होंने कहा कि यह स्क्रीनिंग नो टच नो पेन कंप्लीट प्राइवेसी द्वारा की जाती है। डॉ जयंती थुम्सी और शिरीन चोपड़ा ने मंडल के कार्यों की सराहना की। मंडल ने महेंद्र श्रीमाल का सम्मान किया।

कार्यक्रम की संयोजिका इंदु खिवेंसरा ने डॉक्टर का परिचय दिया। कार्यक्रम में डीसीपी साउथ और एसीपी श्रीनिवास का पूर्ण सहयोग रहा। राष्ट्रीय कार्यकारिणी परामर्शक लता जैन, सहमंत्री वीणा पोरवाल, संगठनमंत्री पवनबाई संचेती, प्रचार प्रसार मंत्री संगीता आंचलिया, कोषाध्यक्ष किरण गिलुंडिया, पूर्व अध्यक्ष कांता लोढ़ा, पुष्पा गन्ना आदि उपस्थित थीं। कार्यक्रम का संचालन एवं आभार मंत्री ज्योति संचेती ने किया।

संत प्रवेश

दक्षिण भारत राष्ट्रमत

खरतर गच्छाधिपति आचार्यश्री मणिप्रभसागरसूरीश्वरजी का मंगल प्रवेश कुडलू गेट स्थित माइक्रो लेब गेस्ट हाउस में हुआ। गौतम लब्धिनिधान जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ हारलुरु रोड एवं खरतरगच्छ युवा परिषद(केयुप) के सदस्यों ने आचार्यश्री के दर्शन वंदन और विहार सेवा का लाभ लिया। संघ की महिला सदस्याओं ने भी गोचरी सेवा में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया। ज्ञातव्य है कि आचार्य मणिप्रभसागर जी शांतिनगर, जयनगर बेंगलूरु होते हुए मागड़ी रोड पहुंचेंगे जहां उनकी निश्रा में 5 से 11 फ़रवरी तक सुमतिनाथ जिनालय सह दादावाड़ी अंजनशलाका प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव एवं भागवती दीक्षा महोत्सव होगा।

देव उत्सव

दक्षिण भारत राष्ट्रमत

बेंगलूरु के विनायका लेआउट नागरिक संगठन द्वारा आयोजित देवरा उत्सव एवं विशेष देव पूजा कार्यक्रम में सोलापुरदा अम्मा, श्री करियाम्मा देवी, कैंपाम्मा एवं जाजीराम्मा देवी की झांकी सजाई गई। उत्सव में देवी मां के दर्शन करने के लिए बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ी। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि महेंद्र मुणोत ने देवी मां की पूजा अर्चना कर आशीर्वाद लिया। संगठन के रमेश एवं वेंकटेश ने मुणोत को सम्मानित किया।

शॉपिंग का शानदार अनुभव दे रही 'हाई लाइफ ज्वेल्स' की प्रदर्शनी व सेल

बेंगलूरु/दक्षिण भारत। ज्वेलरी शो 'हाई लाइफ ज्वेल्स' के आग़ाज़ के साथ ही इसमें रौनक छाई हुई है। इसकी शुरुआत यहां ताज वेस्ट एंड में 2 फरवरी को हुई थी। यह प्रदर्शनी व सेल 4 फरवरी तक जारी रहेगी।

इसका समय सुबह 10 बजे से रात 8 बजे तक है। आयोजकों ने बताया कि हाई लाइफ फैशन और लक्जरी प्रदर्शनियों की पर्याय है, जो शॉपिंग का शानदार अनुभव देने के लिए जानी जाती है। इसका लेटेस्ट वेंचर हाई लाइफ ज्वेल्स एक शानदार शो है, जो 100 से ज्यादा प्रीमियम आभूषण ब्रांड्स को एक छत के नीचे लाता है। यह भव्य ब्राइडल ज्वेलरी और ओकेजन ज्वेलरी की शॉपिंग के लिए परफेक्ट जगह है। उन्होंने कहा कि कोई भी भारतीय शादी दुल्हन के गहनों और शृंगार के बिना पूरी नहीं होती। हाई लाइफ ज्वेल्स में टाइमलेस क्लासिक्स, एंटीक ज्वेलरी, पोल्की और कुंदन ज्वेलरी, समकालीन ज्वेलरी जैसी आभूषणों की समृद्ध शृंखला है, जो हर दुल्हन के दिल में जगह बनाएगी।

इसके अलावा ब्राइडल, गोल्ड, फुट वियर, बेड लिनन, नेल आर्ट, लहंगा, डायमंड, बैग और क्लच, फर्निशिंग, स्किन केयर, कस्टम मेड, सिल्वर, कमर बेल्ट, रग्स एंड कार्पेट, फेस केयर, कीमती स्टोन्स, हेयर एक्सेसरीज, फर्नीचर, बालों की देखभाल, डिजाइनर सूट, मिट्टी के बर्तन, हाथ से बने साबुन, पोशाक, पेंटिंग, सुगंध संग्रह, भित्ति चित्र, डिजाइनर साड़ी, मास्क, ब्लाउज, फॉर्मल वियर, ऑफिस वियर, दीया, कैजुअल, कैंडल्स, सेमी कैजुअल, स्टेशनरी, लाउंज, ट्राउसेउ पैकिंग, पार्टी वियर, गिफ्टिंग, मेन्स एथनिक वियर, किड्स वियर, शॉल और स्टोल आदि उपलब्ध रहेंगे।

Published by Bhupendra Kumar on behalf of New Media Company, Arihant Plaza, 2nd Floor, 84-85, Wall Tax Road, Chennai-600 003 and printed by R. Kannan Adityan at Deviyin Kanmani Achagam, 246, Anna Salai, Thousand Lights, Chennai-600 006.
Regn No. RNI No. : TNHIN / 2013 / 52520 **Editor : Bhupendra Kumar** (Responsible for selection of news under PRB Act.). Group Editor - Shreekant Parashar.
Reproduction of any matter from this newspaper in whole or in part or any such manner without prior written permission from the publisher is strictly prohibited and punishable by law.